kissekahani.com

सुधाकर अग्रवाल, सहारनपुर :
यदि आपकी ऐनक छुपा दी जाए, तो रातमें आप स्वप्न कैसे देखेंगे?
पहले तो हम तुम्हें ही 'देखेंगे'!

कार्तिकेय, सहारनपुर :
जब कोई पागल हो जाता है, तब उसकी अक्ल कहां चली जाती है?
चरागाहोंमें!

आशा जैन, दिल्ली :
यदि निबकी तरह अक्ल भी घिस घिस कर मोटी होने लगे, तो?
तो वह भी इसी तरहके प्रश्न पूछने लगे!

मीरा रमन, हावड़ा :
हाथी चींटीको देखकर क्या सोचता है?
किस नंबरका चश्मा लगाकर देखेगा?

मंजू भार्गव, वाराणसी :
माता-पिता यह चाहते हैं कि उनका पुत्र लायक निकले, तो वह आखिर किस लायक हो?
कमसे कम यह जानने लायक तो निकले कि उसे किस लायक बनना है!

नरेंद्रकुमार चांदना, लुधियाना :
मोटे आदमीको देखकर सब हंसने लगते हैं, परंतु मोटे पशुको देखकर कोई नहीं हंसता—क्यों?
क्योंकि पशुओंपर हंसनेके लिए पशुबुद्धिकी आवश्यकता होती है!

पार्थो मुखर्जी, बरेली :
बड़ी मुसीबतमें है जान,
सुनिए, संपादक श्रीमान्!
प्रिय 'पराग' की सभी कहानी,
हो जाती हैं याद जबानी!
लेकिन पढ़ूं कोर्सकी पुस्तक,
तो क्यों चकराता है मस्तक?
सुनिए, पाठक, चतुर सुजान,
चाट-पकौड़ी, चटनी, नान।
जो इनको ही नित नित खावे,
अपनी नैया आप डुबावे!

जनार्दन शर्मा, बर्नपुर :
घुटे हुए सिरको चांद कहते हैं, तो बालोंसे भरे हुए सिरको क्या कहेंगे?
बाल-चंद्र!

विनय शर्मा, अंबाला छावनी :
रेडियोका 'अर्थ' जमीनमें होता है और शब्दका अर्थ?
शब्दकोशमें!

सुभाषचंद्र अग्रवाल, तिनसुकिया :
बच्चोंके लिए मिठाईसे भी प्यारी चीज क्या है?
पिटाई, बशर्ते कि वह दूसरेकी हो!

अनिलकुमार श्रीवास्तव, लखनऊ :
इस महंगाईके समयमें सबसे सस्ती वस्तु?
स्पष्ट है—महंगाई, जो हर कहीं बिना परिश्रम किए मिलती है!

परमानंद, कोटा :
मेरा जन्म पहली अप्रैल १९६० को हुआ था। मैं हर साल अपना जन्मदिन धूमधामसे मनाना चाहता हूं, लेकिन कोई भी मित्र पार्टीमें नहीं आता—बताइए क्या करूं?
हमें तो यह भी संदेह है कि तुम हो भी या नहीं!

महेशचंद्र अग्रवाल, अलवर :
क्लासमें जरा-सा भी शोर करनेपर हमें सजा मिलती है, जबकि विधान सभाओंमें कुर्सियां फेंकनेपर भी उनसे कुछ नहीं कहा जाता—ऐसा भेदभाव क्यों?
चिंता न करो—क्लासमें जिन बच्चोंको सजाएं मिलती हैं, वे ही बड़े होकर विधान सभाओंमें पहुंचते हैं!

अब्दुल हफीज, सिरोज :
मूर्ख कितने प्रकारके होते हैं?
अनेक प्रकारके, जिनमें प्रश्नवाचक सबसे विकट होता है!

विजयप्रताप, रुड़की :
'पराग' अभी बारह वर्षका भी नहीं हुआ, जबकि मुझे चौदहवां साल खत्म होने वाला है। फिर भला छोटा बड़ेको कैसे पढ़ा रहा है?
जो हर महीने एक कदम आगे बढ़ जानेमें विश्वास

बच्चोंके अटपटे प्रश्नोंके चटपटे उत्तर हम इस स्तंभमें छापते हैं। जिनके प्रश्न अधिक अटपटे होंगे, उन्हें सुंदर-से पुरस्कार मिलेंगे। जिन्हें पुरस्कार मिले हैं, उनके नामके पहले ★ का निशान लगा है। प्रश्न कार्डपर ही भेजो और एक बारमें तीनसे ज्यादा मत भेजो। इस स्तंभमें पहेलियोंके उत्तर नहीं दिए जाएंगे। पता याद कर लो : संपादक, 'पराग (अटपटे-चटपटे)', पो. आ. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बम्बई–१

रखता हो, वह छोटा होते हुए भी बड़ा हो जाता है!

राजीव लोचन, चित्तरंजन :

आज हमारी आवाज उन नेताओं तक क्यों नहीं पहुंचती, जो आरामकुर्सीपर बैठे हैं?

क्योंकि उन्हें स्वयं चिल्लानेसे फुरसत नहीं—और वह भी अंग्रेजीमें!

महेंद्रकुमार आर्य, कलकत्ता :

भारतकी जनसंख्यामें लगभग आधी संख्या हम बच्चोंकी है, लेकिन फिर भी हमारा कोई प्रतिनिधि राज्य सभा, विधान सभा व विधान परिषदोंमें क्यों नहीं है?

हमें तो वहां प्रायः सभी तुम लोगोंके प्रतिनिधि लगते हैं!

नेतराम माहेश्वरी, बरेली :

अगर 'पराग' शहदकी तरह मीठा बन जाए, तो हम सब बच्चोंकी खुशीकी सीमा कहां तक होगी?

मधुमक्खियोंके छत्तों तक!

बीनासिंह, सीतापुर :

गुदगुदी क्यों लगती है?

ऐसे ऐसे सवाल करोगी, तो लगेगी ही—ही : ही :!

विनोदकुमार सरावगी, साहबा :

अगर कोई व्यक्ति प्रत्येक कार्यको आसानीसे कर सकता है, तो उसे सबसे पहले कौनसा कार्य करना चाहिए?

इसे भी वह आसानीसे तय कर सकता है!

राजकिशोर गर्ग, ग्वालियर –१ :

खारे समुद्रके किनारे लगे हुए नारियल का पानी मीठा क्यों होता है?

खारे समुद्रकी यात्रासे थके हुए लोगोंको चैन देनेके लिए!

राकेश नेगी, गोपेश्वर :

हमारे विद्यालयमें एक पोस्टर लगा है—'दो या तीन बच्चे बस'। इस पोस्टरका फायदा हम कैसे उठाएं?

विद्यालयमें 'पराग' की प्रतियोंकी संख्या बढ़ाकर—एक प्रति दो या तीन बच्चे पढ़ें—बस!

चंद्रप्रकाश सिंघी, जोधपुर :

बादलोंके न तो पंख होते हैं, न ही पहिए, फिर चलते कैसे हैं?

हवाकी गोदमें चढ़कर!

गुरभेजसिंह बग्गा, तीनपहाड़ :

गोबर एक अच्छी खाद है, फिर भी मास्टर साहब कहते हैं कि तुम्हारी खोपड़ीमें गोबर भरा हुआ है—ऐसा क्यों?

अगर बीज नहीं डलेगा, तो खादसे सिवा सड़ांधके और कुछ पैदा नहीं होगा न!

राजकुमार आर्य, चकरभाटा कैम्प :

इनसान पत्थरको पूजता है, परंतु इनसानपर विश्वास क्यों नहीं करता?

आज तक पत्थरोंने किसीके साथ विश्वासघात नहीं किया!

ओंकारनाथ श्रीवास्तव, अजीमगंज :

दोस्त दोस्तीका गला कब घोटता है?

जब दोस्ती स्वयं उसके गलेमें अटक जाती है!

लीलाधर पी. तलेरा, उदयपुर :

भारतसे अंग्रेजोंको निकालनेके लिए कई लड़ाइयां लड़ी गईं और कुर्बानियां देनी पड़ीं। तो क्या अब भारतसे हमेशाके लिए अंग्रेजी भाषाको निकालनेके लिए फिरसे भारतवासियोंको कुर्बानियां देनी पड़ेंगी?

जो देनी हों दे-दिलाकर छुट्टी करो—ऊपरसे परीक्षाएं आ रही हैं!

★ हरिश्चंद्र आसूदामल, नूतन उच्चतर माध्यमिक शाला, पो.–धमतरी, जिला रायपुर (म. प्र.) :

पेटको पापी क्यों कहते हैं?

क्योंकि यह स्वादिष्ट वस्तुओंसे बोझिल हो जाता है और अधिक भोजन करनेकी अनुमति नहीं देता!

★ रफीउल होदा, द्वारा कमरूल होदा, टे आफीसर, आरा, शाहाबाद (बिहार)

कोई भी घटना घटती ही क्यों है, क्यों नहीं है?

अगर जुड़ने लगे, तो हर दिनका समाचार दिनके पत्रसे दुगुने आकारका छापना पड़े!

हाथी की हार

चींटी ने वह चांटा मारा,
गिरा उलटकर हाथी!
सरपट दौड़े अरबी घोड़े,
भागे सारे साथी!

धूल झाड़कर हाथी बोला–
"क्षमा करो, हे रानी!
अब न कभी लड़ने आऊंगा,
जरा पिला दे पानी।"

—विष्णुकांत पांडेय

kissekahani.com

पिछले कई वर्षोंसे 'पराग' में शिशु-गीत छापे जा रहे हैं। इन शिशु-गीतोंके चयनमें बड़ी सावधानी बरती जाती है। क्योंकि शुद्ध शिशु-गीत लिखना उतना आसान नहीं है जितना समझा जाता है, इसलिए अच्छे गीत बहुत कम लिखे जाते हैं। ये गीत ऐसे होने चाहिएं कि इन्हें चारसे छह साल तकके बच्चे आसानीसे जबानी याद कर लें और अन्य भाषा-भाषी बड़े बच्चे भी इनका आनंद ले सकें। इनसे मुहावरेदार हिन्दी सरलतासे जबानपर चढ़ जाती है।

नन्हे-मुन्नों के लिए नए शिशु गीत

गधे का ज्ञान

गदहे से उल्लू यों बोला–
"तू हद से ज्यादा है भोला!
होकर घोड़े जी का पोता,
कपड़ों का गट्ठर है ढोता!"

झुके शरम से गदहाराम,
बंद कर दिया अपना काम।
धोबी ने जब करी पिटाई,
याद बहुत नानी की आई!

—मंगरूराम मिश्र

कविजी के घर चोर

एक रात कवि जी के घर में
घुस आए दो चोर ।
जाग उठे सोते से कवि जी,
बोले सुनकर शोर–

"ठहरो, परेशान मत हो,
मैं टार्च जला दूं, भाई!
चार रोज से ढूंढ रहा हूं,
घर में मिली न पाई!"

----यादराम 'रसेन्द्र'

पहरेदार

काला कुत्ता मटक मटक कर
घर से बाहर आया।
लालटेन छोटी-सी ले ली,
डंडा एक उठाया ।

रात रात भर पहरा देता,
भौं भौं कर चिल्लाता;
चोर-उचक्का कोई घर में
कभी न आने पाता!

भूखे बराती

पीं पीं पीं बजती शहनाई,
चींटी के घर शादी!
दो सौ थान मंगाया रेशम,
सौ गज लाए खादी!

गाड़ी भर कर लाए शक्कर,
सौ मन सूखा आटा!
फिर भी भूखे रहे बराती
भोजन का था घाटा

हेलमेल...

"देख मेरे पास मुर्गी!"

"उंह! मेरी पूसी नहीं देखी—
शेर की मौसी!"

"तुझे अच्छी लगती है न?"

"जरा खेलके तो देख मेरी
मुर्गी से—कैसी लगती है!"

बिजनौर

...का खेल

फोटो : देवीदास कसबेकर

"वाह! यह तो खूब
हाथ मिलाती है!"

और देख तो, तेरी पूसी
कैसे मेरी गोदी में सो रही है रे!"

kissekahani.com

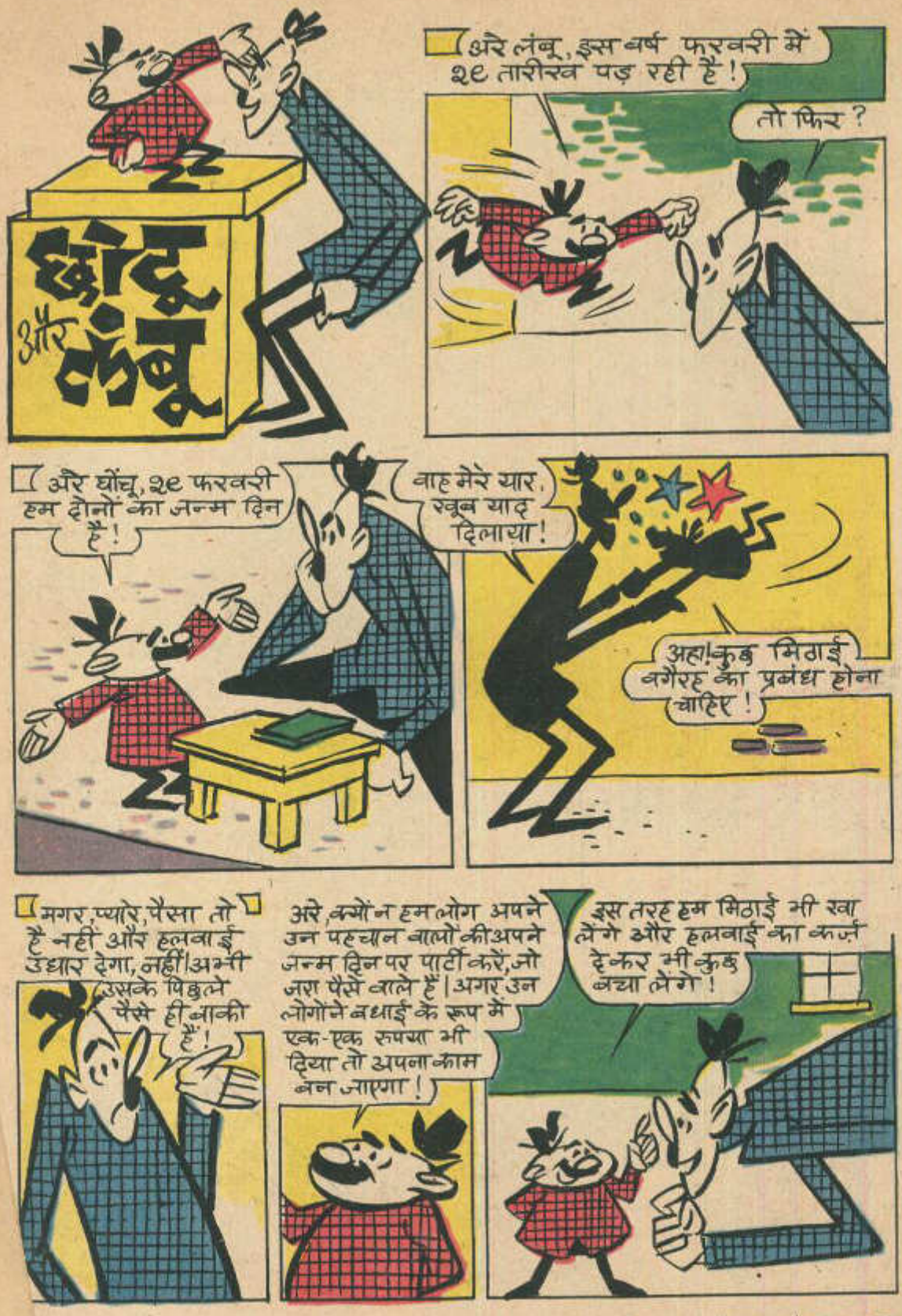

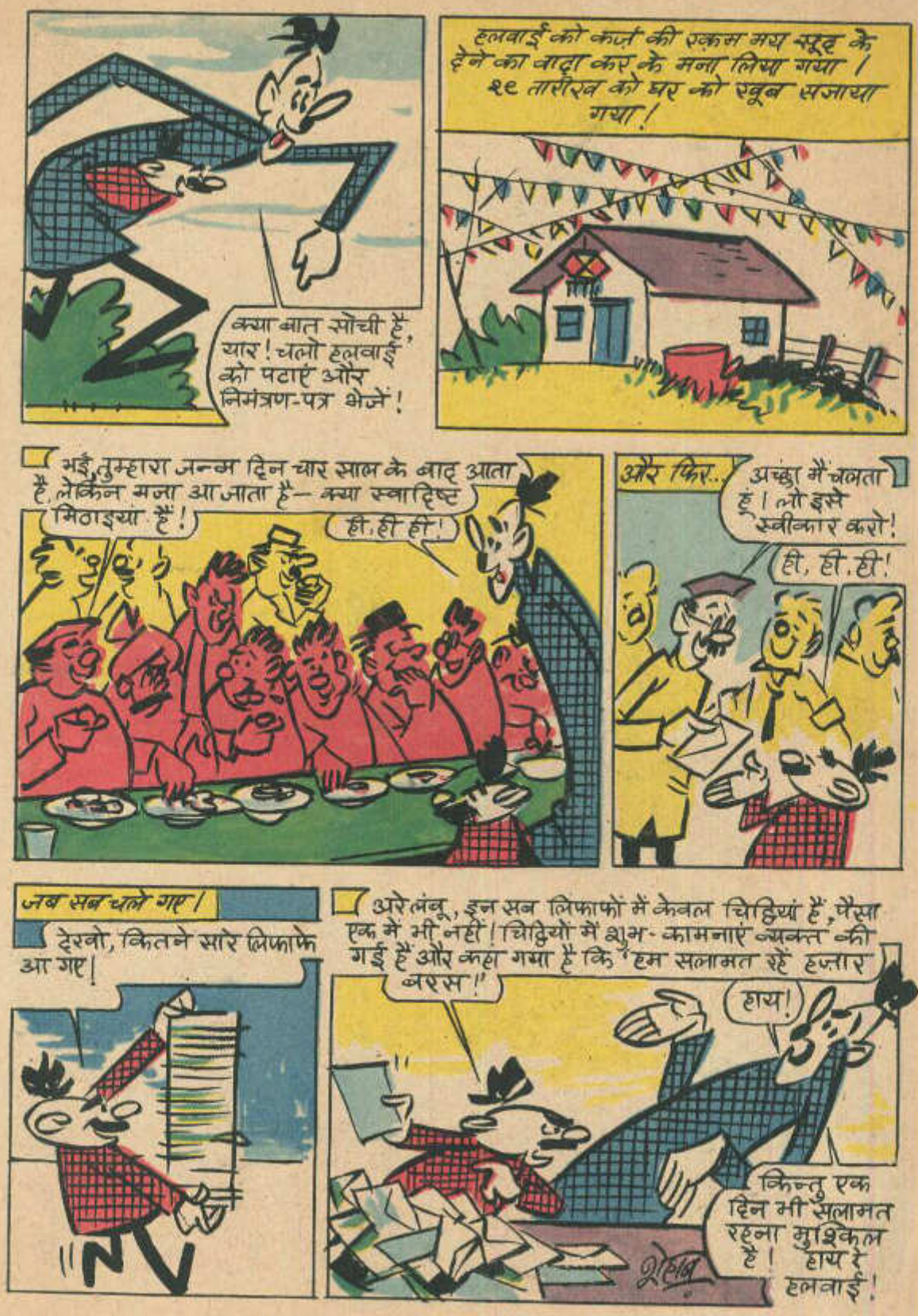
क्या बात सोची है, यार! चलो हलवाई को पटाएं और निमंत्रण-पत्र भेजें!
हलवाई को कर्ज की रकम मय सूद के देने का वादा कर के मना लिया गया। २९ तारीख को घर को खूब सजाया गया!
भई, तुम्हारा जन्म दिन चार साल के बाद आता है, लेकिन मजा आ जाता है— क्या स्वादिष्ट मिठाइयां हैं!
ही, ही, ही!
और फिर..
अच्छा मैं चलता हूं! लो इसे स्वीकार करो!
ही, ही, ही!
जब सब चले गए।
देखो, कितने सारे लिफाफे आ गए!
अरे लंबू, इन सब लिफाफों में केवल चिट्ठियां हैं, पैसा एक में भी नहीं! चिट्ठियों में शुभ-कामनाएं व्यक्त की गई हैं और कहा गया है कि 'हम सलामत रहें हजार बरस!'
हाय!
किन्तु एक दिन भी सलामत रहना मुश्किल है! हाय रे हलवाई!

कहानी

चतुर लोमड़ी

—अजीज़ कुरैशी

किसी जंगलमें रहती थी एक लोमड़ी। वह सारा दिन आंखें बंद किए एक पेड़के खोखले तनेमें बैठी किसी गहरे सोचमें खोई रहती थी।

उस जंगलके सब जानवर और पक्षी उसे बहुत चतुर समझते थे। जब कभी उनमें कोई झगड़ा होता, तो वे लोमड़ीके पास आते और वह न्याय करके उनमें सुलह करा दिया करती थी।

एक दिन एक हाथी और एक बंदर लोमड़ीके पास आए और कहने लगे—"ओ जंगलकी चतुर लोमड़ी, हम दोनों एक बातपर लड़ रहे हैं, आप हमारा फैसला कर दीजिए।"

लोमड़ीने अपनी आंखें खोलते हुए कहा, "हां, बताओ तो सही कि झगड़ेकी बात क्या है?"

बंदर कहने लगा, "मैं कहता हूं कि चतुराई और तेजी अच्छी चीज है। हाथी कहता है कि शक्तिवान और बड़ा होना श्रेष्ठ है। आप फैसला कीजिए कि दोनोंमेंसे कौन-सी चीज अच्छी है।"

लोमड़ीने अपनी आंखें फिर बंद कीं और कुछ देर सोचनेके बाद बोली, "तुम नदीके उस पार सेबका बड़ा पेड़ देख रहे हो न?"

"हां," दोनोंने एक साथ कहा।

"जाओ, मेरे लिए वहांसे कुछ फल तोड़ लाओ," लोमड़ी बोली।

बंदर और हाथी मन ही मन समझे कि लोमड़ी अपनी फीसकी चिंतामें है। फिर भी उसके लिए फल लाने चल खड़े हुए।

नदीके किनारे पहुंचे, तो बंदर बोला, "मैंने तो जिंदगीमें इतनी बड़ी और गहरी नदी कभी पार नहीं की!"

हाथी तुरंत हंस पड़ा और बोला, "शायद अब तुम्हारी समझमें आ गया होगा कि शक्तिवान और बड़ा होना कितना लाभदायक है।

आओ, बंदर साहब, मेरी पीठपर सवार हो जाओ, मैं तुम्हें नदी पार ले चलता हूं।"

बंदर हाथीकी पीठपर चढ़ गया। हाथी उसे नदी पार ले गया। जब दोनों पेड़के पास पहुंचे, तो देखा कि सेब बहुत ऊंचाईपर हैं। हाथीने अपनी सूंड़से फल तोड़ने की बहुत कोशिश की, लेकिन सफल न हो सका। तब उसने पेड़को गिरानेकी कोशिश की। लेकिन पेड़ बहुत मजबूत था, इसलिए उससे गिर न सका। बंदर मुसकराया और बोला, "भाई गजराज, शक्तिवान और बड़ा होना हर जगह काम नहीं आता। मैंने कहा नहीं था कि चतुर और तेज होना ज्यादा अच्छा है?"

यह कहकर बंदरने छलांग लगाई और पेड़की एक ऊंची टहनीपर जा बैठा। वहांसे वह फल तोड़ तोड़कर नीचे फेंकने लगा। फिर दोनोंने सेब बटोरकर लोमड़ीके सामने लाकर रख दिए और कहा—"लीजिए, हमने आपकी शर्त पूरी कर दी। अब बताइए कि दोनोंमें से कौन-सी चीज अच्छी है?"

लोमड़ी बोली, "तुमने खुद ही तो जवाब पा लिया है।"

दोनोंने आश्चर्यसे पूछा, "वह कैसे?"

"लोमड़ीने कहा, नदीको किसने पार किया?"

"मैंने," हाथीने कहा।

अब लोमड़ीने पूछा, "फल किसने तोड़े?"

"मैंने," बंदरने उत्तर दिया!

लोमड़ीने कहा, "बस यही तुम्हारे प्रश्नका उत्तर है। चतुराई और शक्ति दोनों ही जरूरी हैं। हाथीकी मददके बगैर तुम नदी पार नहीं कर सकते थे; और बंदरकी चतुराईके बगैर तुम फल प्राप्त नहीं कर सकते थे। अगर एक व्यक्तिके पास शक्ति है लेकिन चतुराई नहीं, तो वह दुनियामें सफलता नहीं पा सकता।"

आबिद मंजिल; हनुमान वार्ड, हिंगनघाट (वर्धा)

चित्र पहेलियां

फोटो: देवदास कुसुम

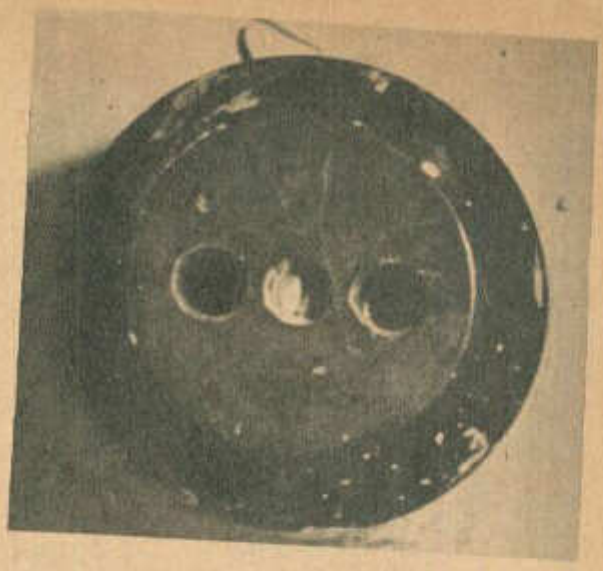

३

१

४

२

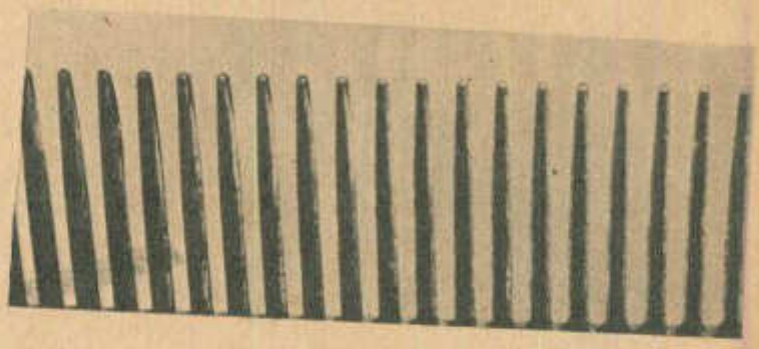

५

बच्चो, इन चित्र पहेलियोंमें फोटो-कैमरेकी करामातसे अजीब अजीब आकार-प्रकारकी शक्लें दी जा रही हैं। इन शक्लोंके अजीब रूप क्या हैं? जरा पहचाननेकी कोशिश तो करो। यदि सफलता न मिले, तो उत्तरके लिए देखो पृष्ठ ३८।

बंगला कहानी

kissekahani.com

परोपकार

बचपनसे सुनता आ रहा हूं कि मेरा मिजाज घरके दूसरे लोगोंसे कुछ अलग ही तरहका है। बात झूठ भी नहीं है। मेरे भाइयों और मुझमें जमीन-आसमानका अंतर है। वे कामके लोग हैं। मोहल्लेमें कोई बात हो जाए, तो सबसे पहले मेरे भाइयोंकी पुकार होती है। पड़ोसियोंके यहां कोई मुसीबत आ जाए तो भी वहां सबसे पहले वे ही पहुंचते हैं।

शायद उनकी तुलनामें मैं थोड़ा आरामतलब भी हूं। गरमीके दिनोंमें मुझे गरमी ज्यादा लगती है। रातमें सोनेकी कोशिशमें इतना थक जाता हूं कि फिर दोपहरमें थोड़ा सोए बिना काम कहीं चलता। सरदी मुझे इतना बेकाबू कर देती है कि उन दिनों तो मुझे हिलना-डुलना तक अच्छा नहीं लगता। बरसातके दिनोंमें शहर कितना बेकार हो जाता है, यह तो सभी जानते हैं। ऐसेमें मुझसे बाहर कैसे निकला जा सकता है?

इस बातको लेकर बाहरके आदमी तो मेरा मजाक बनाते ही हैं, घरके लोग भी नहीं छोड़ते। कभी मां कहती है—"वे सब लोग तो घोषालके यहां शादीमें गए हुए हैं, आज सब्जी तू ही ले आ, सुधीर!"

बाजारका नाम सुनकर मेरी रूह कांपने लगती है।

मैं कह देता हूं—"बाजार! आज सब्जी खरीदनेकी क्या जरूरत है, मां? बादल हो रहे हैं, खिचड़ी ही बना लो!"

भैया और भाभी भी मजाक बनाते हैं। जब खाने बैठता हूं, तो बड़ी भाभी कहती हैं, "देवरजी, तुम्हारे लिए सब्जी सिलपर पीसकर ला दूं? वरना तुम्हें बेकारमें चबानेकी तकलीफ करनी पड़ेगी।"

पोस्टमैन मंझले भैयाकी चिट्ठी दे गया। चिट्ठी दरवाजेसे लाकर मैं उनके हाथमें देता हूं, तो वह जल्दीसे पंखा मेरी ओर घुमाकर कहते हैं—"हवा खा, हवा। एकदम हांफ गया होगा।"

घर और बाहरसे इतना उपहास कब तक बर्दाश्त किया जा सकता है। एक दिन मैंने मन ही मन संकल्प किया कि इस बारसे मैं भी कामका आदमी बनूंगा। दूसरेका भला करनेमें अगर मुझे जान भी देनी पड़े, तो संकोच नहीं करूंगा। मौका भी जल्दी ही हाथ आ गया।

पोस्ट कार्डमें रवि मामाने बहुत दुःखके साथ लिखा था कि वह सख्त बीमार हैं और इस बार बचेंगे नहीं। घरमें और भी सैकड़ों हंगामे हैं। किसीको उनकी देख-भाल करनेकी फुरसत नहीं है। आदमीकी कमीकी वजहसे उनकी ठीक तरहसे दवा-दारू भी नहीं हो पा रही है। हम अगर उन्हें आखिरी बार देखना चाहते हैं, तो इस पोस्ट कार्डको तार समझकर तुरंत पहली गाड़ीसे उनके पास पहुंच जाएं।

रवि मामा मेरी मांके सगे भाई नहीं हैं—वह उनके मौसेरे भाई हैं और अपने बड़े परिवारके साथ कलकत्तामें रहते हैं। वैसे घरमें ढेर सारे लोग हैं। इसपर भी उनकी इस बुरी हालतको सुनकर मेरा मन एकदम पिघल गया।

बड़े भैयाने चिट्ठी पढ़ी और मांके हाथमें देकर हंसते हुए बोले, "रवि मामा तो फिर मरने लगे।"

"यह क्या हंसीकी बात है!" चटसे मैं बोल पड़ा। "तुम लोगोंमेंसे किसीको जानेकी जरूरत नहीं। मैं जाऊंगा।"

प्रेमेंद्र मित्र

सभी लोग आश्चर्यमें पड़ गए। बहुत देर तक फटी-फटी आंखोंसे मेरी ओर देखते रहे। फिर सभी एक साथ हंस दिए। मंझले भैयाने कहा—"यही ठीक है! तू ही जा। इस बार रवि मामाके काबिल आदमी मिला है।"

लेकिन उस वक्त कोई भी मजाक मुझे मेरे निश्चयसे डिगा नहीं सकता था। मैंने कहा—"तुम लोग कुछ भी कहो, मैं जा रहा हूं।"

मांने हंसते हुए कहा, "तू तो पागल है! कहां जाएगा?"

अपनी योग्यता प्रमाणित करनेका यह मौका मैं इतनी आसानीसे हाथसे जाने नहीं देना चाहता था। परोपकारकी गहरी भावनासे प्रेरित होकर मैंने भाइयोंके मजाक और मांके मना करनेकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। और सचमुच ही रातकी गाड़ीसे रवाना हो गया।

रवाना होनेसे पहले सिर्फ मांने थोड़ा हंसकर कहा—"जानेकी जब जिद ही पकड़ ली है, तो मैं क्या कहूं! लेकिन जल्दी लौट आना।"

काश! उस समय मैं मांकी हंसीका कारण समझ पाता।

उस दिन दार्जिलिंग मेल थोड़ा लेट था। सियालदाह स्टेशनपर आठ बजे पहुंचा। सवेरेके वक्त ऐसा लगा मानो पूरा कलकत्ता किसी बड़े यज्ञका हवन-कुंड है जिसमें मेरे हाथ-पांव झुलस रहे हैं।

लेकिन मैं चला था परोपकार करने। यह प्रतिज्ञा कर ही ली थी कि किसी भी कष्टकी परवाह नहीं करूंगा। सियालदाहसे सीधी टैक्सी लेकर मामाके घरकी तरफ चला।

मामाका मकान शहरके एकदम दूसरे कोनेकी तरफ-वाली एक ऐसी गलीमें है जहां टैक्सी भीतर तक नहीं जाती।

साथमें सामान कुछ ज्यादा था। अकेले उठाकर नहीं ले आया जा सकता था। आसपास कोई मजदूर भी दिखलाई नहीं पड़ा। टैक्सीवालेको गलीके मोड़पर खड़ा करके मैं मामाके मकानकी तरफ थोड़ा सामान लेकर चला। सोचा था, वहींसे किसी नौकरको लाकर बाकी सामान ले आऊंगा।

गलीमें होते हुए भी मामाका मकान काफी बड़ा है। मामाने जिस तरहकी चिट्ठी लिखी थी उसके अनुसार घर आकर पता नहीं क्या देखनेको मिले, इसलिए मैं उदास चेहरा बनाकर मुंह लटकाए आगे बढ़ने लगा। मकानके सामने चौकमें सब बच्चे गुट बनाकर गेंद-बल्ला खेल रहे थे। जिस घरमें एक आदमी इतना सख्त बीमार हो वहांके बच्चोंका इस तरह खेलना मुझे कुछ अच्छा नहीं लगा। लेकिन बच्चे हैं। शायद समझते नहीं।

थोड़ा-सा और आगे बढ़नेपर मामाका बड़ा लड़का मिला। सजधजकर साइकिलपर कहीं जा रहा था। ममेरे भाईपर मुझे थोड़ा गुस्सा आया। बाप बीमार है और यह साहब हैं कि सैर करने जा रहे हैं!

मुझे देखते ही उसने खुशीसे हाथ बढ़ाते हुए कहा, "अरे छोट दा, कहांसे? तुम तो दार्जिलिंगमें थे!"

"थे तो," कहकर मैं गंभीरतासे खड़ा रहा।

"इतने कमजोर कैसे हो गए?" यह कहकर उसने मेरी पीठपर एक धप जमाई। मेरे मनमें उसकी पितृभक्तिके प्रति संदेह बढ़ता जा रहा था। लेकिन बादकी बात सुनकर मैं एकदम चौंक पड़ा।

साइकिलके पैडलपर एक पांव रखते हुए उसने कहा, "थोड़ी जल्दीमें हूं, भाई। कैरम कंपीटीशनका सेमी-फाइनल है। वापस आकर तुमसे बातें करूंगा," साइकिलपर चढ़कर जाते जाते वह कह गया। "भीतर जाओ ना, बाबा बाहरके कमरेमें ही शतरंज खेल रहे हैं।"

शतरंज खेल रहे हैं! बाहरवाले कमरेमें पहुंचते ही मैं अवाक् रह गया। रवि मामा लंबे तख्तपोशपर बैठे हुक्केकी नलीको गड़गड़की आवाज करते खींच रहे हैं और एक पंडित जैसे चेहरेवाले आदमीके साथ शतरंज खेल रहे हैं।

मेरे आनेकी तरफ उन्होंने ध्यान भी नहीं दिया। उन्होंने अभी अभी एक मोहरा मारा था। बस, साथी खिलाड़ी पंडितजीकी तरफ विजयभावके साथ देखते हुए हंसकर बोले—"क्या, ठाकुर, बहुत बड़ा घेरा बांधा था ना, अब संभालो।"

उस आदमीके सूखे-से नुकीले चेहरेपर किसी तरहकी हरकत नहीं हुई। धीरे धीरे उसने भी रवि मामाके एक मोहरेको पीट लिया। रवि मामाकी हंसी रुक गई। पंडितजीके हाथसे अपना मोहरा झपटकर उन्होंने कहा, "अरे, मैं देख नहीं पाया था। यह कैसे हो सकता है? यह भी कोई खेल हुआ!"

पंडितजीने चुपचाप मोहरा वापस लौटा दिया। इस बीच थोड़ा-सा अवकाश देखकर मैंने आवाज दी—"मामा बाबू!"

मामा बाबूने एक पलके लिए मेरी ओर देखा और बोले—"अरे सुधीर, तुम! कब आए?"

इसके बाद मेरा उत्तर सुननेका समय उनके पास नहीं था। फिर शतरंजकी चाल सोचनेमें तल्लीन हो गए।

यह सब देख मैं चकित रह गया। गुस्सा भी कम नहीं आ रहा था। तख्तपोशके एक कोनेमें मैं चुपचाप बैठ गया। मामाका खेल चालू रहा। बीच बीचमें वह बोल पड़ते—"अरे सुधीर, कब आए?" यह कहनेके बाद दूसरे ही पल वह फिर खेलमें व्यस्त हो जाते।

मेरा गुस्सा बढ़ता जा रहा था। एक बार उनका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करके मैंने कहनेकी कोशिश की—"मामा बाबू, आपको तो . . ."

लेकिन मुझे बीचमें ही रोककर उन्होंने कहा, "ठहर, ठहर, सब कुछ सुनूंगा। घोड़ेने मुझे मुसीबतमें डाल रखा है।"

बैठे बैठे मन ही मन मैं कुढ़ता रहा। अगर टैक्सीवाला सामान लेकर रफूचक्कर नहीं हो गया होगा, तो अब तक मीटर काफी ऊंचा चढ़ चुका होगा।

घोड़ेको संभाल लेनेके बाद मामा बाबूको और एक बार थोड़ी-सी फुरसत मिली। बोले—"क्या कहा कल

आया था? ठीक है, ठ
ठहरा कहां है? यहींप
कहते शायद मामा बा
आई। थोड़े सकुचाते
मिल गई थी? अरे ब
बस, यह समझ ले कि
किस्त दे रहे हो, ठाकुर

मैंने कहा—"तो

"जाएगा? मामी
लेकिन कल जरूर आन

मैं मनकी बात मन
बड़े रास्तेपर आकर दे
मीटर चालू है।

दूसरे दिन वहां पि
गया। सौभाग्यकी बा
शतरंज खेलने वाला

उन्होंने अपने अने
कि मुझे उनके लिए
लड़का इस बार मैट्रि
उसकी इच्छा है कि क
साइंस पढ़े। लेकिन स
हैं। इस वजहसे काले

आया था? ठीक है, ठीक है। सब कुछ मजेमें तो है ना? ठहरा कहां है? यहींपर क्यों नहीं रहता?" यह कहते कहते शायद मामा बाबूको अपनी पहलेवाली बात याद आई। थोड़े सकुचाते हुए बोले—"तुझे मेरी चिट्ठी मिल गई थी? अरे बचनेकी बिल्कुल उम्मीद नहीं थी। बस, यह समझ ले कि किसी तरह बच गया . . . यह क्या! किस्त दे रहे हो, ठाकुर? तुम्हारा हाथी हिल नहीं रहा।"

मैंने कहा—"तो आज मैं चलता हूं, मामा बाबू।"

"जाएगा? मामीसे नहीं मिलेगा क्या? अच्छा। लेकिन कल जरूर आना, बहुत जरूरी बात करनी है।"

मैं मनकी बात मनमें ही दबाकर वहांसे चला आया। बड़े रास्तेपर आकर देखो, टैक्सीवाला मौजूद है। उसका मीटर चालू है।

दूसरे दिन वहां फिर जाना उचित नहीं था, तो भी गया। सौभाग्यकी बात है कि उस दिन मामा बाबूको शतरंज खेलने वाला कोई साथी नहीं मिला था।

उन्होंने अपने अनेक दुःख मुझे बताए। यह भी कहा कि मुझे उनके लिए एक काम करना ही होगा। बड़ा लड़का इस बार मैट्रिक पास करके कालेजमें जाएगा। उसकी इच्छा है कि कलकत्ताके किसी बड़े कालेजमें वह साइंस पढ़े। लेकिन सवालोंमें उसे थोड़े कम नंबर मिले हैं। इस वजहसे कालेजके अधिकारी उसे भरती नहीं करेंगे। मामा बाबूने यह भी कहा, "तुम तो उसी कालेजके पुराने छात्र हो और भाग्यसे कलकत्तामें ही हो। कोशिश करके किसी न किसी तरह उसे जरूर भरती करवा सकते हो। मेरा इतना-सा उपकार तुम्हें करना ही पड़ेगा। तुझपर ही इस लड़केका भविष्य निर्भर करता है। तेरे सिवा यह काम और कोई करा भी नहीं सकता!"

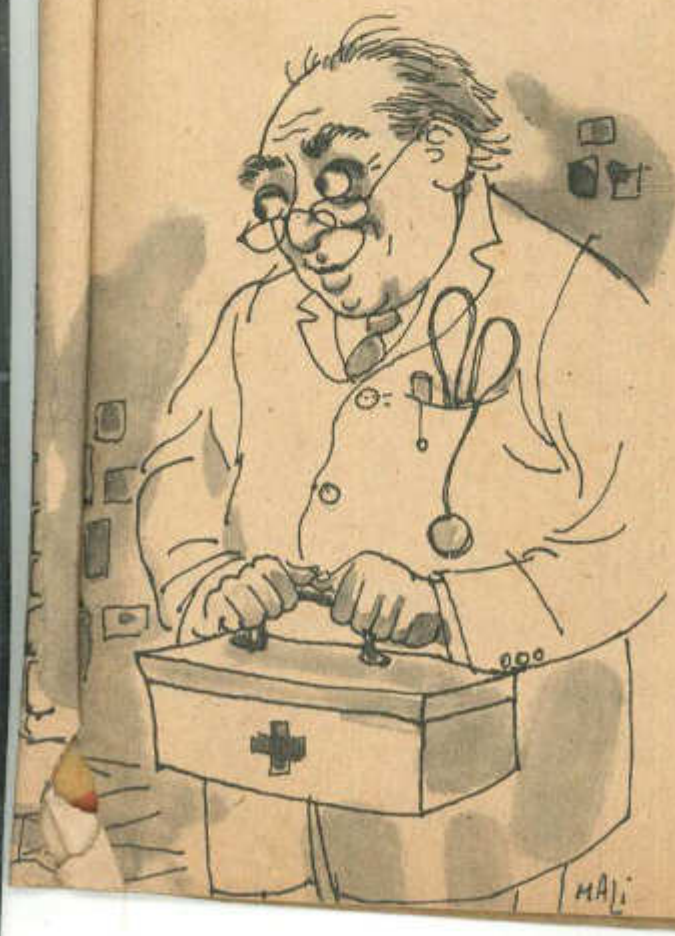

मैं परोपकार करने कलकत्ता आया था। कुछ भी किए बिना वापस लौटा भी नहीं जा सकता है। इसलिए तैयार हो गया। गरमीकी भरी दुपहरीमें दो रोज तक मैं इधर-उधर कई जगह भटका; यहां तक कि मेरे जूतोंके तले घिस गए।

कई लोगोंकी खुशामद करनेके बाद आखिर मैंने अपने ममेरे भाईको कालेजमें भरती करानेका इंतजाम कर ही लिया।

उसके अगले दिन शामको मैं मामा बाबूसे मिलने गया। वह घरपर नहीं थे। थोड़ी देर इंतजार करनेके बाद आ गए। मुझे देखते ही खुश होते हुए बोले—"अच्छा, तुम आ गए। मैं समझा था कि वापस दार्जिलिंग चले गए।"

मैंने कहा, "नहीं, बेनूको हमारे कालेजमें भरती कराए बिना कैसे जा सकता था?"

मामा बाबूने उदासीन भावसे सिर्फ 'हूं' कहा, फिर चुप हो गए।

इसलिए मुझे ही बात उठानी पड़ी—"प्रिंसिपलको बहुत मुश्किलसे राजी किया है।"

"अच्छा," यह कहकर मामा बाबू अन्यमनस्क-से हो गए।

फिर उनका ध्यान आकर्षित करते हुए मैंने कहा, "उसे एक बार प्रिंसिपलसे मिलना पड़ेगा।"

इस बार मामा बाबूने हताश स्वरमें कहा—"हां, मिल लेगा। लेकिन बस इतनी-सी बात है कि थोड़े-से पैसोंका नुकसान होगा।"

मैंने आश्चर्यमें पड़ते हुए पूछा, "पैसोंका नुकसान?"

"हां, नुकसान ही तो होगा। आज मैं उसे आर्ट स्कूलमें भरती करा आया।"

मन ही मन मुझे बेहद गुस्सा आ रहा था। फिर भी अपनेको संभालते हुए मैंने कहा, "भरती करा आए, तो फिर अब साइंस पढ़नेकी क्या जरूरत है?"

मामा बाबूने खुश होते हुए कहा—"मैं भी यही कहता हूं। जानते हो, वह लिख-पढ़ तो सकता नहीं, लेकिन तसवीर बनानेमें उसका हाथ अच्छा है। बचपनमें उसने एक गायकी तसवीर बनाई थी, एकदम गाय जैसे सींग, चार पांव, पूंछ—सब कुछ।"

उस रोज वहांसे पक्का इरादा करके लौटा कि अब जीवनमें कभी मामाके घर नहीं आऊंगा। लेकिन उस

(शेष पृष्ठ ३४ पर)

फ़ोट संबन्धी आवश्यकताओं के लिए
आर० के० स्टूडियोज़
लाईन्स

कहो कैसी रही

पुराने किराएदारने नए किराएदारके छोटे बच्चेको अकेला देखकर उससे पूछा, "तुम्हारे पिताजीका क्या नाम है?"

बच्चेने बतलाया, "बेटा पन्नालाल।"

पूछने वालेको आश्चर्यचकित देखकर बच्चा फिर बोला, "हां, हां, मेरी दादी उनको ऐसे ही बुलाती हैं!"

•

"क्या तुम्हारा कोई भी रिश्तेदार जेलमें तुमसे मुलाकात करनेके लिए नहीं आता?" नए कैदीने पुराने कैदीसे पूछा।

"मैं तो इतना किस्मतवाला हूं कि सबके सब रिश्तेदार यहीं हैं!"

•

एक पादरी साहब एक स्कूलमें प्रवचन करने गए। प्रवचनके बीच कयामत (प्रलय) का जिक्र आ गया। वह बोले, "बादल गरजेंगे, बिजलियां चमकेंगी, नदियोंमें बाढ़ आएगी, आसमानसे पत्थर गिरेंगे, भूचाल आएंगे और पृथ्वीपर अंधकार छा जाएगा।"

एक बालकसे न रहा गया। बोला, "आप यह बतलाइए कि ऐसेमें स्कूलकी छुट्टी होगी या नहीं?"

"राम, तुम्हीं मेरे एकमात्र विश्वासपात्र नौकर हो।"

"नहीं, साहब, आप मेरा विश्वास कभी नहीं करते।"

"कैसे?"

"गांव जाते समय जो चाभियां आप दे गए थे, उनमेंसे एक भी तिजोरीमें नहीं लगी!"

•

एक कविने एक प्रसिद्ध हलवाईकी मिठाईपर एक कविता रचकर उसके पास भेजी। हलवाईने प्रसन्न होकर कविके पास उपहार स्वरूप उसी कागजमें मिठाई भिजवा दी। कविको बड़ा क्रोध आया। इसपर हलवाई बोला, "नाराज क्यों होते हैं, जी? आपने मेरी मिठाईपर कविता की, तो मैंने आपकी कवितापर मिठाई भेज दी। इसमें बुरा माननेकी क्या बात है?"

•

नौकर: "मुझे आपके यहां काम करते हुए पांच साल हो गए, लेकिन आज तक कभी मैंने आपसे अपनी तनख्वाह बढ़ानेके लिए नहीं कहा। परंतु. . ."

सेठ: "इसी लिए तो तुम मेरे यहां पांच साल तक टिक सके। वरना. . ."

एक शायरने कि
पैर दबवाए।
वालेने शायरसे पैसे
का नुस्खा आजमा
"तुमने मेरे पै
हिसाब बराबर हो
मालिशवाला
दाब लेने दीजिए
जाएगा!"

मांकी तबियत
को चाय
मिली। उसने मांको
कहां है?"
"अजीब बात
सामने अलमारीमें
का डिब्बा पड़ा है
लेबिल लगा है, उ

एक जजने एक
"तुम्हें तो झूठ
अपनी मददके लिए

मालिक: "तुमने
तुम पहलेवाले
नौकर: "आप
आपके पहलेवाले नौ

एक आदमीने नए
"सेठजी, अब

एक शायरने किसी तेल-मालिश करने वालेसे पैर दबवाए। पैर दबा देनेके बाद मालिश-वालेने शायरसे पैसे मांगे। शायरने मिर्जा गालिब-का नुस्खा आजमाते हुए कहा—

"तुमने मेरे पैर दाबे, मैंने तुम्हारे पैसे दाबे, हिसाब बराबर हो गया।"

मालिशवाला बोला, "हुजूर, गर्दन और दाब लेने दीजिए, तब हिसाब बराबर हो जाएगा!"

•

मांकी तबियत बिगड़ जानेपर बेचारी मुन्नी-को चाय बनानी पड़ी। उसे चाय नहीं मिली। उसने मांको पुकारकर कहा, "मम्मी, चाय कहां है?"

"अजीब बात ह, तुझे चाय भी नहीं मिलती। सामने अलमारीमें घीके डिब्बेके पास जो काफी-का डिब्बा पड़ा है, अरे वही जिसपर जीरेका लेबिल लगा है, उसीमें चाय है!"

•

एक जजने एक चोरको सुझाव देते हुए कहा, "तुम्हें तो झूठ भी बोलना नहीं आता, अपनी मददके लिए वकील क्यों नहीं कर लेते!"

•

मालिक : "तुमने मुझे यह नहीं बताया कि तुम पहलेवाली जगहसे क्यों चले आए?"

नौकर : "आपने भी तो नहीं बताया कि आपके पहलेवाले नौकर क्यों छोड़कर चले गए!"

•

एक आदमीने नए नए बने लखपतीसे पूछा, "सेठजी, अब आपके धनवान हो जानेपर आपकी गरीबीके दिनोंके दोस्त आपको बड़ा तंग करते होंगे?"

सेठजीने भद्दा-सा मुंह बनाते हुए उत्तर दिया, "अजी जनाब, जब मैं गरीब था, तब मेरा कोई मित्र नहीं था!"

•

सफल आपरेशनके बाद डाक्टर बड़ा खुश नजर आ रहा था। नर्ससे नहीं रहा गया, कारण पूछ बैठी।

डाक्टर बोला, "जिसका आपरेशन किया गया है, वह बहुत धनी आदमी है और उससे मैंने एक हजार रुपए फीस वसूल की है। अगर आपरेशन करनेमें दस मिनिटकी भी देर हो जाती, तो . . ."

नर्सने बीचमें ही पूछ लिया, "अगर दस मिनिटकी देर हो जाती, तो क्या हो जाता! मरीज मर जाता?"

डाक्टर मुस्कराता हुआ बोला, "नहीं, मर तो नहीं जाता, लेकिन उसका दर्द अपने आप ही ठीक हो जाता!"

•

होटलमें एक ग्राहक चीखते हुए बोला—

"बेयरा, इसे ले जाओ यह सब्जी तो बासी है!"

बेयरेने बड़ी शांतिसे कहा, "श्रीमान्, चार

दिनसे लोग इसे खा रहे हैं, लेकिन किसीने इसे बासी नहीं बताया!"

—वीणा वल्लभ

भोलू भाई की भूल भुलैया-४

kissekahani.com

सरला की खोज

जबसे चीनियोंने भोलू भाईको हिमालयकी चोटी-से गिराया था (सपनेमें क्योंकि वास्तवमें वह खाटसे गिरे थे), तबसे उन्होंने चारों तरफ ठस्सेकी हवा चला दी थी। जो उनसे मिलता उसे एकबारगी लगता कि भोलू भाई तीसमारखां भले ही न हों, चीनमारखां जरूर हैं। कक्षाके मुख्य अध्यापक महोदय भी हैरान थे कि भोलू भाई गणितके उन सवालोंका जवाब भी पटा-पट दे देते हैं, जिन्हें दूसरे बच्चे कमसे कम पांच-दस मिनिट स्लेट या कापीपर हिसाब लगाकर बताते हैं। अच्छेसे अच्छे होशियार विद्यार्थी उनके पाससे कन्नी काटकर निकल जाते थे। वह जिसे अकड़ता देखते, उसीकी बांह थाम लेते और तोपके गोलेकी तरह एक बेढब-सा सवाल दाग देते। बेचारा उनका मुंह देखता रह जाता। फिर भोलू भाई खूब ठहाका लगाते, उसपर सवाल के जवाबका दूसरा गोला दाग कर आगे खिसक जाते।

जब गणितके सारे चतुर विद्यार्थियोंने उनकी गणित बुद्धिका लोहा मान लिया और उन्हें गुरुजीकी तरह श्रद्धाकी दृष्टिसे देखने लगे, तो भोलू भाईने छोटे विद्यार्थियोंको सताना शुरू कर दिया। उन्हीं दिनोंकी यह घटना है :

सरलाके भाई मिट्ठूकी सूरत एक तो वैसे ही गंभीर थी—ऊपरसे वह रुआंसा मुंह लिए भोलू भाईके पाससे गुजरा। भोलू भाईने अपनी आदतके अनुसार उसकी बांह थामी और बोले, "मिट्ठू भाई, क्या मुसीबत आई, जो ऐसी रोनी शक्ल बनाई?"

मिट्ठू भाईने पहले तो सहमकर उनकी तरफ देखा, फिर अचानक ही बुक्का फाड़कर रो पड़े। "अरे, अरे, यह क्या? तुम तो रोने लगे!" भोलू भाई चकित-से होकर बोले।

"रोऊं नहीं तो क्या करूं? मेरी बोब्बो..."

"बोब्बो!" भोलू भाई और भी चकित हुए।

"हां...मेरी बहन सरला..." और वह और भी जोरसे रोने लगा।

"सरला!" भोलू भाई फिर चकराए। "सरलाको क्या हुआ?"

"खो गई," मिट्ठू भाईने हिचकियां लेते लेते उत्तर दिया।

भोलू भाई मिट्ठूरामकी बहन सरलाको खूब अच्छी तरह जानते थे। वह कुल तीन बरसकी बच्ची थी और भोलू भाईको 'बोलू बाई' कहा करती थी। हठात् उन्होंने अपनी जासूस बुद्धिका परिचय देते हुए पूछा : "कब खो गई?"

"आज," मिट्ठूने उत्तर दिया।

"कैसे कपड़े पहने थी?"

"सिर्फ एक फ्राक पहने थी," मिट्ठूरामने आंखोंको हथेलीकी पीठसे मलते हुए उत्तर दिया।

"किस रंगकी?"

"यह तो पता नहीं। पर उसके पास दो फ्राक-से ज्यादा कभी रहती ही नहीं थीं," मिट्ठूराम बोले। "नई फ्राक लेनेसे पहले ही मम्मी उसकी पुरानी फ्राक महरीकी लड़की को दे देती थीं।"

"पर आखिरी बार उसके पास किस किस रंगकी दो फ्राकें थीं?" भोलू भाईने पूछा।

"क्या बताऊं?" मिट्ठूराम बोले, "मम्मी-को कुछ याद तो रहता नहीं। उन्होंने यह परचा नोट-बुकमेंसे फाड़कर दिया है कि किसी होशि-यार-से सहपाठीसे उसकी उस फ्राकका रंग मालूम कर आऊं, जिसे पहनकर वह खो गई है।"

"होशियार-सा सहपाठी!" भोलू भाईने क्रुद्ध होकर उसके हाथमें दबा परचा झटक लिया। भला हिसाब लगानेमें उनके जितना होशियार सहपाठी और कौन हो सकता है? भोलू भाईने परचा खोलकर पढ़ा। सरलाकी मम्मीने अपनी औघड़ भाषामें इस प्रकार हिसाब लिख रखा था :

१—आज ही मैं
की लड़कीको दी थी
खो गई।

२—जो फ्राक मैं
थी, उससे पहले ख
था।

३—कल खरीद
की जो फ्राक मैंने
उसका रंग ब्राउन

४—सरलाके दि
थी, उससे पहले ख

मिट्ठू भाई अचान

फ्राक मैंने महरीकी
हरा था।

५—ब्राउन फ्राक
मैंने महरीकी लड़की
वही था, जैसे रंगकी

हिसाब किताब
कर भोलू भाईकी
उससे छुट्टी पानेके
पुलिसमें रपट लिख

"लिखाई है।
हैं कि पहले किसी
बातोंका पता लगाक
ढूंढ़ेंगे। उन्होंने परचे

"क्या चार बा
से पूछा।

१–आज ही मैंने सरलाकी एक फ्राक महरीकी लड़कीको दी थी। दूसरी सरला पहने थी कि खो गई।

२–जो फ्राक मैंने सरलाके लिए कल खरीदी थी, उससे पहले खरीदी गई फ्राकका रंग नीला था।

३–कल खरीदी हुई फ्राकसे पहले सरलाकी जो फ्राक मैंने महरीकी लड़कीको दी थी उसका रंग ब्राउन था।

४–सरलाके लिए जो फ्राक मैंने कल खरीदी थी, उससे पहले खरीदी हुई फ्राकसे पहले जो

मिट्ठू भाई अचानक ही बुक्का फाड़कर रो पड़े!

फ्राक मैंने महरीकी लड़कीको दी थी, उसका रंग हरा था।

५–ब्राउन फ्राक खरीदनेसे पहले जो फ्राक मैंने महरीकी लड़कीको दी थी, उसका रंग भी वही था, जैसे रंगकी फ्राक मैंने खरीदी थी।

हिसाब किताबकी इस घपलेबाजीको देखकर भोलू भाईकी शेखी हवा हो गई। उन्होंने उससे छुट्टी पानेकी गरजसे पूछा : "क्यों रे, पुलिसमें रपट लिखाई?"

"लिखाई है। पर वे हंसते हैं और कहते हैं कि पहले किसी होशियार-से सहपाठीसे चार बातोंका पता लगाकर लाओ, तब हम सरलाको ढूंढेंगे। उन्होंने परचेकी नकल भी रख ली है।"

"क्या चार बातें?" भोलू भाईने उत्सुकतासे पूछा।

"चार बातें ये हैं," मिट्ठूराम रटे हुए तोतेकी तरह बोले : "एक : जब सरला खो गई, तो किस रंगकी फ्राक पहने थी—दो : आज मम्मीने किस रंगकी फ्राक महरीकी लड़कीको दी थी, क्योंकि महरीकी लड़की भी सरलाके साथ साथ गुम है—तीन : कल मम्मीने किस रंगकी फ्राक खरीदी थी—चार : इस परचेमें जिन फ्राकोंका जिक्र है, उनमेंसे सबसे पुरानी फ्राकका रंग क्या था?"

अब तो भोलू भाई गुद्दी खुजाने लगे। सच है, हिसाब-किताबमें किसीको अपने आपको तीसमारखां नहीं समझना चाहिए। यह तो निरंतर अभ्यासकी चीज है। अब इज्जत कैसे बचे? वह मिट्ठूरामको साथ लिए-दिए कक्षामें आए और उसे एक चाकलेट खानेको दिया। वह उसे चुभलाता हुआ उन्हींकी आधी सीटको घेरकर बैठ गया।

भोलू भाई कागज-पेंसिल निकालकर हिसाब-किताबमें ऐसे डूबे कि उन्हें यह पता ही नहीं लगा कब कक्षामें सारे सहपाठी आ गए, कब अध्यापकजी आए और किस तरह वे सब धीमे धीमे मुसकराते हुए भोलू भाईकी भाव-भंगिमा निरख रहे थे। उन्हें यह भी पता नहीं चला कि किस तरह मिट्ठूराम उनके खुले डेस्कमेंसे निकाल निकालकर हंसते हंसते उनके सारे चाकलेट चटकर गए—क्योंकि यह तो उन्हें बादमें पता चला कि सरला-वरला कोई नहीं खो गई थी। यह तो कक्षाके गणितके अध्यापक महोदयने कक्षाके अन्य विद्यार्थियोंके साथ मिलकर षड्यंत्र रचा था और मिट्ठूरामको उसका मोहरा बनाया था।

मगर, जो भी हो, भोलू भाई की इज्जत बराबर दांवपर लगी हुई थी।

(बच्चो, क्या तुम भोलू भाईकी इज्जत बचा सकते हो? अगर तुम पुलिस द्वारा कथित चारों प्रश्नोंके उत्तर यानी चारों फ्राकोंके नंबरवार रंग एक पोस्टकार्डपर सही सही लिखकर हमें १५ फरवरी तक भेज दो, तो भोलू भाईकी नाक बचाने वालोंमें तुम्हारा नाम भी शामिल करके 'पराग' के 'अप्रैल अंक' में छापा जाएगा। पता याद कर लो : 'भोलू भाई की भूलभुलैया नं. ४', पराग, पो. बा. नंबर २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बंबई–१)

कहानी

स्वाभिमान एक शेर का

सुरेंद्र भंडारी

kissekahani.com

किसी गांवमें एक निहायत गरीब ब्राह्मण रहता था। उसके तीन लड़के और एक बूढ़ी पत्नी थी। बेचारा ब्राह्मण सुबह घरसे निकल जाता। दिन भर जंगलमें लकड़ियां काटता। शामको उन्हें ले जाकर शहरमें बेचता। कभी लकड़ियोंके उसे अच्छे पैसे मिल जाते, तो कभी बेचारा किस्मतका मारा खाली हाथ घर लौटता। लकड़ियां बेचकर जो कुछ पैसे उसे मिलते उनसे वह बाजारसे खाने-पीनेकी कुछ चीजें खरीदता और रात गए घर वापस लौटता।

एक दिनकी बात है, ब्राह्मणने खूब मोटी मोटी लकड़ियां काटीं और उन्हें उठाकर शहरकी ओर चलनेको ही था कि एक रीछ सामनेसे गुर्राता हुआ आता दिखाई दिया। रीछको अपनी ओर आते देखकर ब्राह्मणकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। उसने लकड़ियोंका गट्ठर जमीनपर फेंका और सिरपर पैर रखकर भागा।

उसने सोचा, 'जान बची लाखों पाए, लकड़ियां तो फिर भी काट लूंगा लेकिन जान चली गई, तो फिर क्या होगा?' काफी दूर भागनेके बाद वह जंगलके बाहर आ गया। बेचारा भागते भागते पसीनेसे लथपथ हो गया। उसकी सांस तेजीसे चल रही थी। उसने रुककर पीछे देखा कि कहीं रीछ अभी भी पीछा तो नहीं कर रहा है। परंतु काफी दूर तक उसे कुछ नजर न आया। उसने संतोषकी सांस ली। सोचने लगा कि जान तो बच गई, परंतु अब वह घर क्या लेकर जाएगा? उसके बच्चे और उसकी पत्नी उसकी बाट देख रहे होंगे। एक बार उसने सोचा कि वापस जाकर लकड़ीका गट्ठर उठा लाए, परंतु उसका साहस न हुआ और अंतमें हारकर खाली हाथ वह घरकी ओर चल दिया।

घर पहुंचकर उसने सारी कहानी अपनी पत्नीसे कह सुनाई। उसकी पत्नीने उसे ढाढ़स बंधाया और बोली—"ईश्वरका लाख लाख धन्यवाद कि आप बचकर आ गए। जहां इतने दिन हम भूखे पेट सो जाते हैं, वहां एक दिन और खाना नहीं मिलेगा, तो क्या बात है!"

कुछ देर पति-पत्नी चुपचाप एक दूसरेका मुंह देखते रहे। फिर ब्राह्मणकी पत्नी बोली—"लकड़ियां काटते काटते आप बूढ़े हो चले हैं। परंतु कभी हम लोगोंके पास इतना खानेके लिए नहीं हुआ कि हमें दूसरे दिनके खानेकी चिंता न रही हो। फिर दिनपर दिन हमारे लड़के भी बड़े हो रहे हैं। इनका क्या होगा? अगर आप मेरा कहना मानें, तो नौकरीके लिए परदेश चले जाइए। क्या पता आपको कोई ऐसी नौकरी मिल जाए कि हम देखते ही देखते धनवान हो जाएं। फिर हमारे पास एक अच्छा मकान होगा। मकानमें हमारे पास नौकर-चाकर होंगे। हमारे लड़कोंके लिए अच्छे अच्छे घरोंसे रिश्ते आएंगे। आप जिधर भी निकलेंगे आपके साथ दो-चार आदमी होंगे। सारा गांव हमारी इज्जत करेगा।"

ब्राह्मण खुशीसे उछल पड़ा और बोला, "क्या खूब बात कही. . .! मैं धनवान हूंगा. . .! मेरे पास अच्छा मकान होगा . . .! गांवमें मेरी इज्जत होगी . . .! ठीक है, बिलकुल ठीक है। मैं कल सुबह ही नौकरीके लिए परदेश जाऊंगा। खूब पैसा लेकर वापस लौटूंगा। फिर तुम्हें किसी प्रकारकी चिंता नहीं रहेगी। हमारी पांचों उंगलियां घीमें होंगी।"

सारी रात ब्राह्मण सो भी न पाया। बार बार उठकर बाहर देखता। अंधेरा देखकर फिर सो जाता। आखिर सुबह हुई और ब्राह्मण लोटा-डोरी हाथमें लेकर गांवके बाहर हो गया। चलते-चलते शाम हो गई, परंतु उसे कुछ भी थकान महसूस न हुई। उसके दिमागमें तो केवल एक ही खयाल था—धनवान बननेका। आखिर रात

भी हो गई और उसे
रहनेके लिए कोई स्था
उसने चारों ओर
ही एक घना पेड़ न
आजकी रात इसी पे
सुबह होते ही चल
पहुंच गया और उस
करने लगा। अचान
ओर एक गुफा नजर
कि पेड़पर सोनेमें गि
इसलिए क्यों न इस
जाए। वह गुफाके अं
एक कोनेमें बैठ गया
एक बंदर पेड़के
रहा था। उसने देख
भूला-भटका कहींसे
इसे क्या मालूम कि
सोचा कि इस मनुष्य
बंदर पेड़से नीचे
जाकर ब्राह्मणसे बो
पड़ते हैं। आप जिस

भी हो गई और उसे मजबूर होकर जंगलमें ही रहनेके लिए कोई स्थान ढूंढ़ना पड़ा।

उसने चारों ओर नजर घुमाई। उसे सामने ही एक घना पेड़ नजर आया। उसने सोचा, आजकी रात इसी पेड़पर बिता ली जाए, फिर सुबह होते ही चल देना है। वह पेड़के पास पहुंच गया और उसके ऊपर चढ़नेकी कोशिश करने लगा। अचानक उसे उस पेड़की पिछली ओर एक गुफा नजर आई। उसने विचार किया कि पेड़पर सोनेमें गिरनेका खतरा हो सकता है, इसलिए क्यों न इस गुफाके अंदर रात बिताई जाए। वह गुफाके अंदर घुस गया और चुपचाप एक कोनेमें बैठ गया।

एक बंदर पेड़के ऊपर बैठा यह सब देख रहा था। उसने देखा कि यह बेचारा परदेशी भूला-भटका कहींसे इस जंगलमें आ गया है। इसे क्या मालूम कि यह गुफा किसकी है? उसने सोचा कि इस मनुष्यकी रक्षा करनी चाहिए। बंदर पेड़से नीचे उतरा और गुफाके सामने जाकर ब्राह्मणसे बोला—"आप परदेशी जान पड़ते हैं। आप जिस गुफामें बैठे हैं यह शेरकी गुफा है। यदि आप अपनी जान बचाना चाहते हैं, तो फौरन यहांसे भाग जाइए, वरना थोड़ी ही देरमें शेर आता होगा।"

"ऐं. . . ऐं . . .! क्या कहा, यह गुफा शेरकी है?" ब्राह्मण घबराते हुए बोला। "अच्छा, बंदर भैया, नमस्कार। आपको बहुत बहुत धन्यवाद कि आज आपने मेरे प्राण बचा लिए।" इतना कहकर वह एक ओर भागनेको ही था कि बंदर बोला—"एक मिनिट. . . आप जा तो रहे हैं, परंतु पता नहीं कि शेर आज जंगलमें शिकार-के लिए किस ओर गया है। कहीं वह उसी ओर-से आ रहा हो, जिस ओर आप जा रहे हैं, तो क्या होगा?"

"हां, हां, हो सकता है . . . शेर उसी ओरसे आ रहा हो! तो जल्दी बताओ, बंदर भैया, मुझे क्या करना होगा?"

बंदर कुछ सोचते हुए बोला, "अब, मेरे खयालमें जान बचानेका एक ही उपाय है और वह यह कि तुम जल्दीसे फूलोंकी एक माला बना लो। और जैसे ही शेर तुम्हारे पास आए उसके गलेमें फूलोंकी माला डाल देना। फिर 'जय-यजमानकी' कहकर उससे इधर-उधरकी बात करना शुरू कर देना।"

"वाह! वाह! क्या खूब तरकीब सुझाई है," ब्राह्मण खुशीसे उछल पड़ा।

"परंतु होशियारीसे काम लेना, घबराना मत। अगर शेरको तुम्हारी झूठ बातका पता लग गया, तो वह तुम्हें फाड़कर खा जाएगा।"

"ठीक है, ठीक है," कहता हुआ ब्राह्मण जल्दीसे फूल तोड़कर एक माला तैयार करने

लगा। थोड़ी ही देरमें शेर भी आ गया। ब्राह्मणने लपककर फुरतीसे उसके गलेमें माला डाल दी और जोरसे बोला, "जय यजमान की।"

शेरने ब्राह्मणकी ओर आंख घुमाते हुए देखा और गुर्राते हुए कहा, "तुम कौन हो?"

"हे जंगलके महाराज, मैं आपका पुरोहित हूं। आपके पिताजी तो मुझे बहुत अच्छी तरह जानते थे और मैं एक बार तब भी आया था जब आप बच्चे थे। शायद आपको इतनी पुरानी बात याद नहीं होगी। उसके बाद अपनी गृहस्थी-के चक्करोंमें कुछ इस प्रकार उलझा रहा कि कोशिश करते हुए भी आपके दर्शनोंके लिए समय न निकाल पाया। आज इतने वर्षों बाद आपके दर्शनोंका सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है।"

शेर ब्राह्मणको अंदर ले गया और उसे आदरपूर्वक बिठाया। उसके बाद काफी देर तक दोनोंमें बातचीत होती रही। शेरने ब्राह्मणको फल खानेको दिए। फिर रातको दोनों आरामसे सो गए। सुबह होते ही ब्राह्मण शेरके पास गया और बोला, "यजमान, अब मुझे चलनेकी आज्ञा दीजिए। मुझे एक जगह जरूरी कामसे जाना है। आपसे मिलनेकी बहुत दिनोंसे इच्छा थी, सो आज पूरी हो गई। अब फिर कभी समय निकाल-कर अवश्य आऊंगा।"

"ब्राह्मण देवता, इस समय आपकी सेवा करनेके लिए मेरे पास कुछ भी नहीं, परंतु आपको गुफाके उस कोनेमें जितने जेवर इत्यादि मिलें उठा ले जाइए।"

जेवरोंका नाम सुनते ही ब्राह्मण कुछ सकपकाया, फिर अपने आपको संभालते हुए बोला, "नहीं, नहीं, महाराज, जेवरोंकी क्या आवश्यकता है। आपने इतना आदर और सम्मान मुझे दिया, यही क्या कम है!"

"यह तो ठीक है, फिर भी कुछ न कुछ दक्षिणा तो ब्राह्मणको अपने यजमानसे लेनी ही चाहिए।"

"आपकी बात मैं कैसे टाल सकता हूं," ब्राह्मण झूठ-मूठ ही हंसते हुए बोला और उस कोनेकी ओर बढ़ गया जिस ओर शेरने इशारा किया था। वहां उसने देखा, तो अनगिनत जेवर इधर-उधर बिखरे पड़े थे और एक कोनेमें मनुष्य की हड्डियोंका ढेर पड़ा हुआ था। वह होश-हवास खो बैठा और टकटकी लगाए हड्डियोंकी तरफ देखने लगा।

"ब्राह्मण देवता, चिंता मत करो, आपको जितनी जरूरत हो ले लो," शेर हंसते हुए बोला।

ब्राह्मणने अपने आपको संभाला और जल्दी जल्दी अपनी जेबोंको भरने लगा। जब जेबोंमें और जगह बाकी न रही, तो उसने अपनी धोतीके छोरमें बांधना शुरू किया और फिर शेरको बहुत बहुत धन्यवाद देकर घरकी ओर चल दिया।

घर पहुंचते ही उसने सारी कहानी अपनी पत्नीसे कह सुनाई और उसके आगे सोनेके जेवरोंका ढेर लगा दिया।

ब्राह्मणकी पत्नी भी खुशीसे पागल होकर उछलने लगी और अपने पतिके गलेसे लिपट गई।

कुछ ही दिनोंमें झोंपड़ीकी जगह ईंट-पत्थरों-का पक्का मकान बनकर तैयार हो गया। रोज शामके समय ब्राह्मणके घरपर चौपाल जमती। गांवके बड़े-बूढ़े, जो पहले उसे गरीब समझकर बात भी करना पसंद नहीं करते थे, अब घंटों उसके पास बैठे रहते। ब्राह्मणकी पत्नीकी भी

सारी गांवकी स्त्रियां
ब्राह्मण परिवार सु
समय गुजरते
गए। ब्राह्मणके
दिन उसके बड़े ल
बहुत बड़े जमींदार
शादीका दिन
सोचा, शेरको भी नि
बदौलत आज उसे
प्राप्त हो रहा है।
जंगलकी ओर चल
शेरके आते ही उसने
डाल दी। दोनोंमें
रही। शेरने जब ब्रा
तो उसने कहा, "
शादी अगले महीनेमें
देने आया हूं। अ
होना होगा।"
"यह तो बड़ी
लिए जितने भी ध
ले जाइए, परंतु मुझे
सकता हूं?"
ब्राह्मण हठ पक
न आए, तो बारात न
जैसी मरजी हो कीजि
अंतमें शेरको ह
इस बार भी शेरने
वान जेवर इत्यादि दे
शादीका दिन अ
के अनुसार आ पहुंचा
देखा, तो सभी डरके
अपने घरोंमें घुस गए
चारों ओर चहल-
गया। शेरके आते
गलेमें डाल दी औ
लिए स्थान दिया।
शेर बोला, "ब्रा
आपसे कहा था कि
लेकिन आपने मेरी
आनेसे आपके कार्यमें
"महाराज, आप
से बैठिए, मैं अभी
आता हूं," ब्राह्मण

सारी गांवकी स्त्रियां इज्जत करतीं । इस प्रकार ब्राह्मण परिवार सुखसे जीवन बिताने लगा ।

समय गुजरते देर नहीं लगती । वर्षों बीत गए । ब्राह्मणके लड़के बड़े हो गए और एक दिन उसके बड़े लड़केकी शादी एक गांवके बहुत बड़े जमींदारकी लड़कीसे तय हो गई ।

शादीका दिन निकट आ गया । ब्राह्मणने सोचा, शेरको भी निमंत्रण देना चाहिए । उसीकी बदौलत आज उसे ऐसा दिन देखनेका सौभाग्य प्राप्त हो रहा है । यह सोचकर ब्राह्मण खुद ही जंगलकी ओर चल दिया । गुफाके पास पहुंचकर शेरके आते ही उसने उसके गलेमें फूलोंकी माला डाल दी । दोनोंमें काफी देर तक बातचीत होती रही । शेरने जब ब्राह्मणसे आनेका कारण पूछा, तो उसने कहा, "महाराज, मेरे बड़े लड़केकी शादी अगले महीनेमें है । मैं आपको निमंत्रण देने आया हूं । आपको अवश्य उसमें शामिल होना होगा ।"

"यह तो बड़ी खुशीकी बात है । शादीके लिए जितने भी धनकी आवश्यकता हो आप ले जाइए, परंतु मुझे क्षमा कीजिए । मैं कैसे आ सकता हूं?"

ब्राह्मण हठ पकड़ते हुए बोला, "यदि आप न आए, तो बारात नहीं जाएगी । अब आपकी जैसी मरजी हो कीजिए ।"

अंतमें शेरको हारकर 'हां' भरनी ही पड़ी । इस बार भी शेरने ब्राह्मणको कितने ही मूल्यवान जेवर इत्यादि देकर बिदा किया ।

शादीका दिन आ गया । शेर भी अपने वायदेके अनुसार आ पहुंचा । लोगोंने जब शेरको आते देखा, तो सभी डरके मारे चीखते-चिल्लाते अपने अपने घरोंमें घुस गए । जहां थोड़ी देर पहले चारों ओर चहल-पहल थी, अब सुनसान हो गया । शेरके आते ही ब्राह्मणने माला शेरके गलेमें डाल दी और उसे आदरपूर्वक बैठनेके लिए स्थान दिया ।

शेर बोला, "ब्राह्मण देवता, मैंने पहले ही आपसे कहा था कि मुझे आप मत बुलाइए, लेकिन आपने मेरी एक न मानी । देखिए, मेरे आनेसे आपके कार्यमें कितनी बाधा पहुंची!"

"महाराज, आप चिंता न करें । आप आरामसे बैठिए, मैं अभी लोगोंको समझा-बुझाकर ले आता हूं," ब्राह्मण बोला ।

राजा बेटे बनो

'बल्ब' फोड़ देने में क्या है बहादुरी,
केवल वहां अंधेरा ही कर देते हो!
जहां बल्ब रातों में चमका करता था;
वहां सब तरफ अंधकार भर देते हो!

कितने बच्चे गड्ढों में गिर पड़ते हैं,
बूढ़ी माई चलती, ठोकर खाती है!
बल्ब फोड़ने से देखो क्या होता है;
चोर-उचक्कों की केवल बन आती है!

'बस' को तोड़-फोड़ देनेसे क्या मिलता,
केवल कुछ लोगों को बेबस कर देते!
कितनों का नुकसान, डांट कुछ लोगों की;
और देश के सीने पर ठोकर देते!

तोड़-फोड़ मत करो, तनिक सोचो पल भर,
नहीं गैर का, देश तुम्हारा अपना है!
राजा बेटे बनो, नया निर्माण करो,
वह सच करके दिखला दो, जो सपना है!

—चंद्रपालसिंह यादव 'मयंक'

ब्राह्मण गांवमें घर घर गया । सब लोगोंको दिलासा देते हुए बुलाकर ले आया । लोगोंने भी जब शेरको माला पहने हुए आरामसे ब्राह्मणके घरपर बैठे देखा, तो धीरे धीरे फिर सब जमा होने लगे ।

शामके समय खूब धूम-धामसे बारात रवाना हुई । शेर भी बारातके साथ साथ चल रहा था । जब बारात गांवके पास पहुंची, तो जो लोग बारातको लेने आए हुए थे शेरको देखते ही सिरपर पैर रखकर भाग खड़े हुए । वहां भी वही स्थिति हुई जैसी ब्राह्मणके गांवमें हुई थी । सारा गांव सुनसान हो गया । ब्राह्मण यह देखकर गांवके लोगोंके पास पहुंचा और जोरसे

(शेष पृष्ठ ५१ पर)

kissekahani.com

पहला दिन :

कुमार जिस सड़कसे स्कूल जाता था, वह अभी हाल हीमें बनी थी। सड़क खूब चौड़ी और चिकनी थी। छोटी-बड़ी गाड़ियां जब सड़कपर तेजीसे चलतीं, तो बड़ी अजीब अजीब आवाजें होतीं। कुमारको गाड़ियोंकी आवाजाही बड़ी अच्छी लगती। वह कभी कभी यह दृश्य देखनेके लिए सड़ककी एक ओर खड़ा हो जाता।

मगर उसी महीने जब दो-तीन बच्चे गाड़ियोंके नीचे आ गए, तो कुमारके पापाने बड़ी सख्तीसे मनाही कर दी—"बड़ी सड़कसे स्कूल मत जाया करो!"

अब कुमार दूसरी राहसे स्कूल जाने लगा। यह एक छोटी-सी संकरी गली थी। जिसकी दोनों ओर बड़ी-बड़ी इमारतोंका पिछवाड़ा पड़ता था। इसलिए गली कुछ अंधेरी रहती थी। कहीं कहीं गंदगीके कारण कुमारको अपनी नाक बंद करके चलना पड़ता था।

कुछ तकलीफ तो होती थी उसे, फिर भी उसे यह गली बुरी नहीं लगती थी। इस गलीका एक सिरा कुमारके मकानके पिछवाड़ेसे ही शुरू होता था। दूसरा सिरा स्वामी श्रद्धानंदके मंदिरवाली सड़कपर खत्म हो जाता था। गलीमें प्रवेश करते ही ठीक सामने छोटी-सी पीले रंगकी एक इमारत थी।

कहानी

तीन दिन.....तीन

उस दिन जब
कनीपर कुमारकी
अपंगोंके काम आने
कुर्सीपर एक लड़
लड़की बड़ी तन्मय
होने वाली चमकील
गाड़ियोंको देख र
तेजीसे एक तरफसे
तेजीसे आगे बढ़ ज
जाकर किसी गलीमें

लड़कीने कुमा
देखा था। कुमार
वह लड़की बड़ी अ

आज भी कुमा
अपनी कुर्सीपर बै
जल्दीसे कंधेपर बस
किया। जेबसे कल
उसे ठीकसे जेबमें
करने लगा। तभी
एक तरफ उठी।
सड़ककी तरफसे बच
हुई आ रही थी।
एक आदमी एक ग
रहा था। उसने फट
लिखा था—'मूर्ख'

कुमारको हंसी
देखा। लड़कीने उसे
दी। कुमारको ल
किताबका कोई पन्ना
और सीधी सीधी
उसके सामने फड़फड़

लड़की मुसक
दोनों ओर छोटे छो

कुमारको उसन

दूसरा दिन :

संकरी गलीमें

...तीन मुसकान

• फ़ज़लुल बारी

उस दिन जब उसी पीली इमारतकी बालकनीपर कुमारकी नजर पड़ी थी, तो उसने देखा, अपंगोंके काम आने वाली पहिएदार कुर्सीपर एक लड़की बैठी थी। लड़की बड़ी तन्मयतासे सामने पार होने वाली चमकीली और रंग-बिरंगी गाड़ियोंको देख रही थी, जो बड़ी तेजीसे एक तरफसे आतीं और उसी तेजीसे आगे बढ़ जातीं। फिर आगे जाकर किसी गलीमें मुड़ जातीं।

लड़कीने कुमारकी तरफ भी देखा था। कुमारको न जाने क्यों वह लड़की बड़ी अच्छी लगी।

आज भी कुमारने देखा, लड़की अपनी कुर्सीपर बैठी है। कुमारने जल्दीसे कंधेपर बस्ते का फीता ठीक किया। जेबसे कलम निकाली और उसे ठीकसे जेबमें खोंसनेकी कोशिश करने लगा। तभी कुमारकी नजर एक तरफ उठी। नए पार्कवाली सड़ककी तरफसे बच्चोंकी एक भीड़ शोर मचाती हुई आ रही थी। आगे आगे चार्ली चैप्लिन-सा एक आदमी एक गधेपर बैठा लंबा-सा सिगार पी रहा था। उसने फटा हैट लगा रखा था, जिसपर लिखा था—'मूर्खाधिराज १९६८'।

कुमारको हंसी आ गई। तभी उसने लड़कीको देखा। लड़कीने उसे देखा। फिर लड़की मुसकरा दी। कुमारको लगा जैसे किसी बिलकुल नई किताबका कोई पन्ना, चिकना चिकना, उजला-सा और सोंधी सोंधी प्यारी कागजी महकवाला, उसके सामने फड़फड़ाकर खुल गया हो।

लड़की मुसकराई, तो उसके गालोंमें दोनों ओर छोटे छोटे दो गड्ढे पड़ गए।

कुमारको उसकी मुसकान बड़ी भली लगी!

दूसरा दिन :

संकरी गलीमें प्रवेश करते ही ठीक दो दूकानोंके बाद कसाईकी दूकान थी, जिसके सामने कुमार अक्सर कुत्तोंको आपसमें लड़ते देखता था। पिछले शनिवारको स्कूल जाते समय एक अजीब-सी घटना कुमारके साथ घटी :

साढ़े नौ बजे थे। कुमार गलीसे निकला, तो देखा, वह अपंग लड़की अभी भी बालकनीपर बैठी थी। मगर वह उसकी तरफ नहीं देख रही थी। कुमार आगे बढ़ा। अभी वह कसाईकी दूकानके नजदीक पहुंचा ही था कि कसाईने कोई चीज उसके आगे फेंकी। कुमार देख न पाया। मगर तभी कसाईका वह बड़ा-सा काला कुत्ता उसकी ओर झपटा। उसके पीछे तीन-चार और कुत्ते लड़ते हुए दौड़े। कुमार कुछ समझ न पाया, मगर उसके पांव उखड़ गए। वह चप्पल छोड़कर एक तरफ भागा।

तभी उसकी नजर अपंग लड़कीके कोठेकी तरफ चली गई। लड़की कुमारको डरसे

भागते देखकर जोर जोरसे हंस रही थी। कुमारको बड़ी झेंप महसूस हुई। उसने मुड़कर देखा, तो काला कुत्ता सामने पड़ी हुई हड्डी-को मुहमें दबाए हुए था और आसपासके कुत्ते उस हड्डीके लिए गुर्रा रहे थे।

कुमारने शरमाकर कोठेकी तरफ नजर उठाई। लड़की अब भी उसी तरफ हंस रही थी।

आज इतवारके बाद सोमवार था। रातमें लगातार कई घंटों तक बारिश हुई, तो गली कीचड़से भर गई। कुमार जब गलीके अंतिम छोर तक आया, तो उसके बूट कीचड़से सन गए। उसने पासके एक पत्थरपर अपने पैर जोर जोरसे पटके।

जूते साफ हो गए। फिर भी उसे गलीसे निकलनेमें अजीब-सी झिझक महसूस हो रही थी। उसने अंदाज लगाया वह लड़की अभी भी अपने स्थानपर बैठी होगी। मगर उसे आंखें उठाकर ऊपर देखनेकी हिम्मत न हुई।

फिर गलीसे निकलते समय उसने कन-खियोंसे कोठेपर नजर डाली, तो पाया, लड़की बालकनीपर नहीं है। उसे कुछ इतमीनान हुआ और वह निश्चिततासे जल्दी जल्दी पैर बढ़ाने लगा।

प्रति मास

नए पुरस्कार

बच्चो, इस अंककी कहानियां ध्यानसे पढ़ो और हमें २० फ. वरी तक लिखो कि अपनी पसंदके विचारसे कौन कौन-सी कहानी तुम पहले, दूसरे, तीसरे आदि नंबरोंपर रखोगे। तुम्हें इस प्रकार सभी कहानियोंपर अपनी पसंद बतानी है। इसमें एकांकी और धारावाही उपन्यास शामिल नहीं होंगे। केवल वे ही कहानियां शामिल होंगी, जिनका उल्लेख 'अतापता' में 'मजेदार कहानियां' के अंतर्गत आया है। जिन बच्चोंकी पसंदका क्रम बहुमतसे अधिकतम मेलखाता हुआ होगा, 'पराग' में उन सब बच्चोंके नाम छापे जाएंगे और उन्हें हम सुंदर सुंदर पुस्तकें पुरस्कारमें भेजेंगे। अपनी पसंद एकदम अलग कार्डपर लिखो—'अटपटे चटपटे' आदिके कार्डों-पर नहीं। अपनी उम्र भी अवश्य लिखो। पता यह लिखो—**संपादक, 'पराग (हमारी पसंद–१४)', पो. आ. बाक्स नं. २१३, टाइम्स ऑफ इंडिया बिल्डिंग, बम्बई–१।**

कुछ ही दूरीपर, एक जनरल स्टोरके सामने एक मोटर साइकिल खड़ी थी। कुमार पाससे गुजरा, तो उसकी आड़से एक बड़ा-सा एलसे-शियन कुत्ता उसकी आहट पाकर खड़ा हो गया और लगा गुर्राने। कुमारको कुछ सूझा नहीं—खड़ा रहे या भागे!

कुत्ता गुर्राता रहा। कुमारने अंदाजा लगाया—कोठेपरसे लड़की देख रही होगी और मुसकरा रही होगी. . .व्यंग्यसे!

कुमार डर रहा था। फिर भी उसने हिम्मत-से काम लिया। यह उसकी इज्जतका सवाल था। उसने दिल कड़ा किया और चुपचाप तेज कदमों-से कुत्तेके सामनेसे होकर गुजर गया। कुत्ता गुर्राता रह गया। कुमार आगे बढ़ा। फिर उसने मुड़कर कोठेकी ओर देखा।

लड़की मुसकरा रही थी . . .सचमुच!

तीसरा दिन :

कुमारकी पतली कलाईमें उसकी नई सुन-हरी घड़ी बड़ी अच्छी लग रही थी। उजली चम-कीली चेनमें बंधी घड़ीकी पीली डायल खूब फब रही थी—जैसे चांदीके धागेमें सोनेकी राखी बंधी हो। कुमार बार बार कनखियोंसे अपनी नई घड़ीको निहारता जाता था। उसकी मंझली दीदीने उसे यह घड़ी पार्सल द्वारा बेरुतसे भेजी थी; जहां उसके पति अमरीकी तेल-कंपनीमें इंजी-नियर हैं। दीदीने अपने पत्रमें लिखा था—

"भैया, राखीका त्यौहार आ गया है। मगर मैं तुमसे हजारों मीलकी दूरीपर हूं। फिर यहांपर राखीका त्यौहार मनाया नहीं जाता। धागोंवाली राखी मिलती नहीं। इस-लिए तुम्हें एक नई किस्मकी राखी भेज रही हूं। इसे राखी समझकर ही बांधना . . .

—तुम्हारी मंझली दीदी।"

कुमारने भी घड़ीको राखी ही समझा और राखीकी तरह ही दाईं कलाईमें बांधा।

कपड़े बदलकर जब वह बाहर निकलने लगा, तो उसके पापाने मुसकराकर उससे समय पूछा। कुमारने बड़ी गंभीरतासे कलाई मोड़ी, घड़ी देखी और कहा—"इट इज फिफ्टीन टू बी टेन।"

उसकी अंग्रेजी सुनकर पापा हंस पड़े। वह

झेंप गया।

ठीक दस बजे
लेकिन आज छोटा
कोई पर्व था, इस
वह बहुत देर तक
दाएं हाथकी घड़ी
घूमता रहा। मगर
अनायास ही उस
गलीकी तरफ उठ

यद्यपि बाहर
फैली थी, फिर भी
था। बीचमें गली कु
सिर उठाकर ऊपर
अंधेरे कुएंमें खड़ा है
ऊपर चमकता हुआ
लग रहा था।

गलीके अंतमें
पर हाथ फेरा, फिर
घड़ीकी चेनमें उंगली
निकल आया। अब
पर देखा—अपंग ल
देख रही थी। झेंप
डाली, तो वह और
लाकर पासके एक

"पांच चाकलेट
एक चवन्नी आगे ब
बाहर निकल आया
तीन-पांच और एक
दूकानदारने एक ज्य
पाकिटमें रखना च
नजर गई। देखा,
घूर रही थी। कुमार
गई! उसने अप
किया। वह वापस
"आपने एक चाकले

और एक चाक
कर वह शानसे घड़ी
आ गया। उसने अं
उठाई। लड़की उसे
भी मुसकरा दिया।

निर्गायक वर्ष, हिन्दी
सेंट जेवियर्स कालेज, र

झेंप गया।

ठीक दस बजे उसके पापा दफ्तर चले गए। लेकिन आज छोटा नागपुरके आदिवासियोंका कोई पर्व था, इसलिए उसका स्कूल बंद था। वह बहुत देर तक यूं ही जेबमें बायां हाथ डाले, दाएं हाथकी घड़ीको बार बार देखता हुआ घूमता रहा। मगर दिल कहीं लगा नहीं। अंतमें अनायास ही उसके पांव पिछवाड़ेकी संकरी गलीकी तरफ उठ गए।

यद्यपि बाहर धूप उजली चांदीकी तरह फैली थी, फिर भी गलीमें उतना उजाला नहीं था। बीचमें गली कुछ चौड़ी हो गई थी। कुमारने सिर उठाकर ऊपर देखा, तो लगा, जैसे वह किसी अंधेरे कुएंमें खड़ा है। ऊंची ऊंची दीवारोंसे भी ऊपर चमकता हुआ नीला आकाश बड़ा भला लग रहा था।

गलीके अंतमें उसने एक बार अपने बालों-पर हाथ फेरा, फिर बुश्शर्टपर नजर डाली। फिर घड़ीकी चेनमें उंगली फंसाता हुआ गलीसे बाहर निकल आया। अब उसने पीली इमारतके कोठे-पर देखा—अपंग लड़की बैठी हुई उसीकी तरफ देख रही थी। झेंपकर कुमारने घड़ीपर नजर डाली, तो वह और भी झेंप गया। फिर वह बौख-लाकर पासके एक स्टोरमें घुस गया।

"पांच चाकलेट देना," कुमारने कहा और एक चवन्नी आगे बढ़ा दी। चाकलेट लेकर वह बाहर निकल आया। उसने गिना—"दो. . . तीन-पांच और एक. . ." चाकलेट छह थे! दूकानदारने एक ज्यादा दे दिया था। उसने उन्हें पाकिटमें रखना चाहा, तभी कोठेपर उसकी नजर गई। देखा, लड़की उसीको आंखें फाड़े घूर रही थी। कुमारको लगा, उसकी चोरी पकड़ी गई! उसने अपनेको अपमानित-सा महसूस किया। वह वापस स्टोरमें घुसा और बोला—"आपने एक चाकलेट ज्यादा दे दिया था।"

और एक चाकलेट दूकानदारके आगे फेंक-कर वह शानसे घड़ी देखता हुआ स्टोरसे बाहर आ गया। उसने अंतिम बार कोठेकी ओर नजर उठाई। लड़की उसे देखकर मुसकरा दी। कुमार भी मुसकरा दिया। ●

निर्गायक वर्ग, हिन्दी प्रतिष्ठा,
सेंट जेवियर्स कालेज, रांची (बिहार)

लघु कथा

पहेली

प्राचीन कालमें राजा एक दूसरेको पहेलीके रूपमें उपहार भेजा करते थे। इस प्रकारके उपहारके दो उद्देश्य होते थे। एक तो मनोरंजन, दूसरा राजा और उसके दरबारियोंकी योग्यताकी परीक्षा।

एक पड़ोसी राजाने मगधके राजा नंदके पास अपना एक दूत भेजा। उसके साथ उसने तीन चीजें भेजीं—एक अंगीठी-में दहक रही आग, एक बोरीमें सरसों और एक मीठा फल।

इन विचित्र उपहारोंपर सभीको आश्चर्य हुआ। राजाने अपने मंत्रियोंसे पूछा कि इन रहस्यमय उपहारोंका उत्तर क्या देना चाहिए? मंत्रियोंके निरुत्तर रहनेपर राजाने दरबारियोंसे पूछा। किसी भी दरबारीके उत्तरसे राजाको संतोष नहीं हुआ। अंतमें एक युवकने निवेदन किया: "पड़ोसी राजाने अपने कोपकी उपमा आग-से दी है, जो सब कुछ भस्म कर डालती है। सरसोंकी बोरीके अनगिनत दाने उसकी सेनाकी संख्या बतलाते हैं और मीठे फलसे मैत्रीके मधुर परिणामका अभिप्राय है।"

राजा बेहद खुश हुआ। पहेलीके प्रत्यु-त्तरके लिए भी उसने उसी युवकसे पूछा।

"पानीका एक घड़ा, कुछ तीतर और एक बहुमूल्य हीरा—उत्तरमें भेजे जाएं। कोपाग्नि पानीसे शांत की जा सकती है। अनगिनत सेनारूपी सरसोंके दाने हमारे तीतररूपी वीरों द्वारा चग लिए जाएंगे और नंदकी मित्रता फलकी तरह क्षणिक मिठास देनेवाली नहीं, अपितु हीरेकी तरह मूल्यवान सिद्ध होगी," युवकने सुझाव दिया।

नंदने युवकसे प्रभावित होकर उसे अपना सेनापति नियुक्त कर दिया।

—विजयलक्ष्मी

छाया : घनश्याम अग्रवाल

धरती की परियां

खेतों में, खलिहानों में,
जंगल में, मैदानों में;
ये सब मिलकर जाती हैं,
श्रम करती हैं, गाती हैं।

धरती इनकी माता है,
जनम जनम का नाता है;
ये उसकी पूजा करतीं,
हरदम मां का दम भरतीं।

ठांव ठांव पर हरियाली,
गांव गांव में खुशहाली
ये बालाएं लाती हैं;
भू को स्वर्ग बनाती हैं!

जहां जहां खेती होती,
वहां वहां उगते मोती;
मोती भी कैसे कैसे–
हीरे - पन्ने - मणि जैसे!

सब इनके श्रम का फल है,
इनकी बांहों में बल है,
ये सब कृषक-कुमारी हैं;
ये भारत की नारी हैं!

—किशोरीरमण टण्डन—

आकाश की परियां

छाया : विद्याव्रत

आकाश की परियां

चली घूमने किरण परी,
मिली राह में खड़ी हरी।
पूछा, "बहिना, कहां चली?"
बोली, "बच्चों की नगरी।"

आगे आगे किरण परी,
पीछे नीलम और हरी,
सबसे पीछे लाल चली;
चारों एक साथ निकलीं।

आओ, हम भी वहीं चलें,
बच्चों में हम घुले-मिलें;
उनके मन को बहलाएं,
परीदेश में ले आएं!"

सोचा, पहले चलें किधर?
स्वर्ग इधर तो धरा उधर!
कहा एक ने, "चलो वहां,
नन्हे-मुन्ने मिलें जहां!"

कहा दूसरी ने मुड़ कर,
"हां, हां, चलो चलें भू पर,
बच्चे हमें बुलाते हैं,
मीठी बात सुनाते हैं!"

—तारादत्त 'निर्विरोध'—

छाया : विद्याव्रत

परोपकार (पृष्ठ १९ से आगे)

संकल्पको निभा नहीं पाया।

दार्जिलिंग वापस जानेका सारा इंतजाम कर लिया था कि दूसरे दिन ग्यारह बजे जिस मैसमें मैं ठहरा था वहां मामा बाबू खुद आ गए।

मुझे देखते ही वह रो पड़े। बहुत मुश्किलसे उन्हें शांत किया। इसके बाद उनसे जो कुछ मालूम पड़ा उसका सारांश इस प्रकारसे है—अबकी सचमुच ही उनके घर मुसीबत आई हुई है। बेनू अचानक बीमार हो गया है। घरके बड़े लोग आफिस जा चुके हैं। उन्हें भी आफिस जाना है। आफिस जानेसे पहले डाक्टरको घर ले जानेका समय भी नहीं बचा है। डर और चिंताके मारे वह तो यह भी नहीं सोच पा रहे हैं कि किस डाक्टरको ले जाया जा सकता है। इधर आफिस नहीं जाएं, तो नौकरीपर आफत आ सकती है।

मैंने उन्हें सांत्वना देते हुए कहा—"आप चिंता मत करिए। आफिस जाइए। डाक्टरको मैं ले जाता हूं।"

मेरे दोनों हाथ पकड़कर मामा बाबू एक बार फिर रो पड़े—"मैं तुमपर भरोसा करके जा रहा हूं।

"मैं अभी जा रहा हूं," यह कहकर मैंने उन्हें बिदा किया। फिर डाक्टर खोजने निकला। ज्यादातर डाक्टर रोगियोंको देखने गए हुए थे। बहुत मुश्किलसे एक विशेषज्ञ डाक्टर मिले। वह अपनी गाड़ी मंगवानेके लिए आदमी भेज रहे थे, लेकिन समय कम रहनेकी वजहसे मैंने मना कर दिया और एक टैक्सी बुला ली।

ड्राइवरको तेज चलानेको कहा। काम करनेकी अपनी फुरतीपर मुझे खुद आश्चर्य हो रहा था। मैं सोच रहा था कि मेरे भाई मेरा बहुत मजाक बनाते हैं, काश इस वक्त वे देख पाते!

पहले ही बता चुका हूं कि मामाकी गलीमें गाड़ी नहीं जा सकती। बड़े रास्तेपर ही टैक्सीको छोड़कर मैं डाक्टर साहबको पैदल ले जाने लगा। शायद वह थोड़े नाखुश भी हुए। लेकिन तब मुझे यह सोचनेकी फुरसत नहीं थी।

घरके बाहर कोई भी नहीं था। दरवाजा बंद था। मैंने जाकर जोरसे धक्का दिया। भीतरसे किसी तरहकी आवाज नहीं आई। हो क्या गया? डरके मारे मेरा कलेजा धड़कने लगा। मामा बाबूको आवाज लगाते

पागलखाना—

"यहां वे पागल रखे जाते हैं, जो अपने आपको मोटर मैकेनिक समझते हैं। सब अपनी चारपाइयों के नीचे लेटे अपनी मोटरें ठीक कर रहे हैं!"

हुए मैंने फिर कुंडी खटखटाई। लेकिन इस बार भी कोई जवाब नहीं !

डाक्टर साहब कुछ दूरीपर दरवाजा खुलनेका इंतजार कर रहे थे। उन्हें इस तरहसे खड़ा रखनेके लिए लज्जित होते हुए मैंने और जोरसे दरवाजेको धक्का दिया। इस बार भीतरसे आवाज सुनकर मेरी जानमें जान आई।

कुछ देर बाद नींद में भारी आंखोंको रगड़ते रगड़ते मामाके पुराने नौकर मधुको दरवाजा खोलकर सामने खड़ा देखा, तो चौंक गया। मधु नींदमें खलल पड़नेकी वजहसे थोड़ा झुंझला उठा था। मुझे देखकर हंसनेकी कोशिश करते हुए बोला—"घरमें तो कोई नहीं है, बाबू।"

"घरमें कोई नहीं है। क्या कह रहा है?"

"सब लोग दक्खिनेश्वर गए हैं, बाबू। पहरा देनेके लिए सिर्फ मैं यहां हूं।"

मैं चिढ़ गया—"बेनू बाबू तो बीमार थे न?"

"बीमार?" कुछ देर सोचनेके बाद मधुने बताया कि बाबू बीमार नहीं थे। हां, उन्होंने भातके साथ एक बाल खा लेनेकी वजहसे कै जरूर की थी। लेकिन बीमार जैसी तो कोई बात नहीं थी। दीदी मणिके यहांसे मोटर आते ही सभी लोग अच्छे-भले दक्खिनेश्वर घूमने चले गए।

दूरसे डाक्टरके खंखारनेकी आवाज सुनाई पड़ी। मुझे लगा जैसे कि धरती फट जाए, तो मैं उसमें समा जाऊं। लेकिन डाक्टरको ऐसे कैसे लौटाया जा सकता है? कोई न कोई तरीका तो सोचना ही पड़ेगा।

मैंने मुंह लटकाते हुए कहा—"डाक्टर साहब, थोड़ा भीतर आएंगे क्या?"

डाक्टर काफी गंभीर मुंह बनाकर भीतर आए। फिर पूछा, "रोगी कहां है, जनाब?"

मैंने सकुचाते हुए कहा, "जी, बुरा मत मानिएगा, मैंने खुद अपने लिए आपको बुलाया है।"

एक पलके लिए डाक्टरकी भौंहें ऊपर उठीं, उसके बाद बहुत लापरवाहीसे उन्होंने मेरा हाथ खींचकर कहा, "क्या बीमारी है? बुखार?"

"जी नहीं, पेटमें यहां थोड़ा दर्द है।"

"हूं, लेट जाइए।"

मैं बिस्तरेपर लेट गया। पेटके दर्दकी बात कुछ पलोंमें ही सच हो गई। डाक्टरने पेटमें एक जगह जोरसे दबाते हुए कहा—"यहींपर है दर्द?"

बड़ी मुश्किलसे मेरे गलेसे आवाज निकली—"जी हां।"

"ठीक है, उठ जाइए। कल जुलाब लेना। और एक हफ्ते तक सिर्फ दूध और बार्ली लीजिएगा, और कुछ नहीं।"

"अच्छी बात है।"

डाक्टरने हाथ बढ़ाया। मैंने एक एक रुपयेके कड़क आठ नोट अपनी जेबसे निकालकर उन्हें दिए। रुपये जेबमें डालकर डाक्टर हैट बगलमें दबाए वापस जा ही रहे थे कि फिर मेरी तरफ मुड़कर खड़े हो गए। बोले—

"देखिए।"

"जी।"

"आपको पेटकी बीमारी नहीं है, दिमागकी है। समझे?"

यह कहकर डाक्टर चले गए।

दार्जिलिंग लौट आनेके बाद भाइयों और भाभियोंने जो कुछ कहा वह मैं बता नहीं सकता। ●

(अनुवाद : शेफाली चौधरी)

५७ हरीश चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता–२६

भतीजावाद

हम साहस के बेटे हैं,
खाना खाकर लेटे हैं!

शक्ति हमारी माता है,
लड़ना-भिड़ना आता है!

यदि मां को रखनी है शान,
हम जैसों को देगी ज्ञान।

नहले पर दहले खेलें,
बास मलूका के चेले!

हम पुरुषों का लेकर नाम,
करते रहते हैं आराम!

चाचा नेहरू आते याद,
जिन्दाबाद भतीजावाद!

—राष्ट्रबंधु

सौ सौ चूहे खाकर बिल्ली मौसीके हजको जानेकी खबर इसलिए उड़ाई गई थी, क्योंकि बिल्ली मौसी काफी बूढ़ी हो चली थी। अब उससे शिकार करते न बनता था। दरअसल सौ सौ चूहे खाते खाते बिल्ली मौसी बूढ़ी ही नहीं हो गई थी, बल्कि उसपर बुरा हो बुढ़ापेका कि जब कभी ले-देकर झपट्टा मारा, या तो खुद ही निशाना चूक गया या फिर आंगनमें कबड्डी खेलने वाले सारे चूहे पहले ही सावधान होकर यह जा वह जा! सारा आंगन साफ! न कहीं कोई चूं-चूं, न चीं-चीं! बेचारी बिल्ली मौसीकी आंतें भूखसे

जिसका स्मारक नहीं बना

एक था चूहा

kissekahani.com

ताबड़-तोड़ मुटापा भी चढ़ आया था। इसी लिए वह शिकार सामने पाकर भी एकाएक उसपर झपट्टा न मार सकती थी।

रातके ठीक बारह बजे, जब कहीं कोई पत्ता भी नहीं खड़कता श्री चूं चूं च्यांगके आंगनकी चारों तरफ बने जंगलेके इर्द-गिर्द खूब धमाचौकड़ी और खटर-पटर मचती। बिल्ली मौसीको यह मालूम था कि एकमात्र उसी स्थानसे पेट-पूजाकी थोड़ी-बहुत आशाकी जा सकती है। मगर किस्मत ही तो है!

कुलबुलाने लगीं और इसी लिए अब दिन प्रति दिन उसका शरीर कमजोर होता जा रहा था। एक तो पहले ही बुढ़ापे और मुटापेकी मिली-जुली मार, उसपर यह बेरहम भूख और भूखसे बढ़ती हुई कमजोरी! सामने आंगनमें चूहे कूदते रहे और इधर पेटमें चूहे कूदते रहे। मगर लाचारी थी! कौर सामने है, मगर हाथ बंधे हैं!

उस दिन बिल्ली मौसी घूमते-घामते तालाबकी ओर जा निकली। वहां एक आदमीको मछली पकड़ते देखा, तो देखती रह गई। वह बंसीमें चारा लगाकर तालाबमें लटका देता और जैसे ही मछली चारेपर झपटती, बंसीमें लगे कांटेसे फंसी रह जाती। बस वह आदमी इतमीनानसे उसे ऊपर खींचकर पास ही रखे थैलेमें डाल लेता। यह तरकीब बिल्ली मौसीको पसंद आई और उसके पेटको कुछ आशा बंधी।

काफी सोचने-विचारनेके बाद, वह कहीं से गुड़के दो-तीन ढेले उठा लाई। तुमे जानते ही हो कि चूहोंको गुड़ खानेमें काफी मजा आता है।

जब रात हुई, बिल्ली मौसी थोड़ी देर पहले ही चूहोंके मैदानमें जा पहुंची और 'ट्रायल' के लिए उसने गुड़का एक छोटा-सा ढेला तोड़कर मैदानके बीचोंबीच रख दिया। स्वयं पास ही जंगलेके पीछे छिपकर घातमें बैठ गई। कुछ देर बाद तेजीसे लपकता हुआ एक चूहा आया। उधर उसने गुड़को सूंघना शुरू किया, इधर बिल्ली मौसी सतर्क हो गई। सोचा, अब छलांग लगा दूं। मगर दूरी बनी हुई थी। कहीं पीछे रह गई तो? बिल्ली मौसीने धीरेसे कदम आगे रखा। इतने हीमें चूहे महोदयकी दृष्टि बिल्ली मौसीपर पड़ी, उन्होंने गुड़का ढेला मुंहमें दबाया और यह जा, वह जा!

'धत्तेरेकी! यह शिकार भी गया! ऐसे काम नहीं चलेगा,' बिल्ली मौसीने सोचा और वह फिर चिंतामें पड़ गई।

अब बिल्ली मौसी काफी निराश हो चुकी थी। दिनके उजालेमें मौसीको यों भी कम ही दिखाई पड़ता था और अब तो बुढ़ापे और भूखने आंखोंकी रोशनी भी कम कर दी थी। फिर भी

वीरकुमार 'अधीर'

किस्मतके भरोसे वह दिनमें दबे पांव घरोंके चक्कर लगाती। वैसे दिनमें कम दिखाई देना ही मुश्किलकी बात न थी, बल्कि घरके लोग भी उसे देखते ही 'हुश्! हुश्!' करके भगा देते। बिल्ली मौसीको इससे बड़ी परेशानी थी। रातभर जाड़ेके कारण घरोंके दरवाजे बंद रहते और दिनमें 'हुश्! हुश्!' की आवाजें सुनाई पड़तीं।

इतनी सब बातें सोचती-विचारती बिल्ली मौसी पड़ोसमें ही रहने वाले एक डाक्टर साहबकी छतसे उतरकर, मुंडेरीसे छलांग लगाती हुई उनकी 'लेबोरेटरी'में जा पहुंची। शायद यहीं कुछ खानको मिल जाए। 'लेबोरेटरी'में उस समय कोई मौजूद न था। बिल्ली मौसी एक एक शीशीके नजदीक पहुंचती और सूंघ सूंघकर देखती। किसी शीशीपर लिखा था—'पेटदर्दकी दवा'। 'हुंह, यह भी कोई खानेकी चीज है!' बिल्ली मौसीने पढ़कर मन ही मन कहा। आगे लिखा था—'सिर दर्दकी दवा'। 'बेकार!' मौसी और आगे बढ़ी, लिखा था—'भूख न लगनेपर दी जाने वाली गोलियां'। 'धत्तेरेकी! यहां तो किस्मत ही औंधी है! दवा चाहिए भूख लगनेपर दी जाने वाली, यहां भूख न लगनेपर दी जाने वाली गोलियां मिल रही हैं।' ऊबकर बिल्ली मौसीने झुंझलाहटमें एक उचटती-सी मिचमिचाती नजर उससे अगली शीशीपर डाली, लिखा था—'प्वॉइज़न' अर्थात् 'ज़हर'! 'ए लो जी, यह मिला है खाने को!'

झुंझलाकर बिल्ली मौसी फौरन 'लेबोरेटरी' से बाहरकी ओर चल दी। कहां कबाड़खानेमें आ फंसी! मगर तभी, उसकी आंखें चमकीं और उसके पांवोंको ब्रेक लग गए। फिर वह घूमकर उसी स्थानपर आ गई। झट उचककर अलमारीपर जा चढ़ी और 'प्वॉइज़न' वाली शीशी निकालकर वापस चल दी।

अब रातके ठीक बारह बजे, जिस वक्त आंगनमें चूहे कबड्डी खेलनेके लिए आए, वह पास हीके मकानकी एक मुंडेरपर जा बैठी। उसने माथेपर तिलक लगा रखा था और हाथसे मालाके मनके फेरती जाती थी। अब तक इस ओर चूहोंका कोई ध्यान न गया था। यों भी आजकल वे आंगनमें बेफिक्र खेला-कूदा करते थे। क्योंकि उन्हें पहलेसे ही पता चल चुका था कि अब बिल्ली मौसी बूढ़ी हो चुकी है और वे उसकी पकड़में आनेसे पहले ही भाग सकते हैं। अतएव चूहे खेलते रहे। बिल्ली मौसी आंखें बंद किए मुंडेरपर बैठी राम नाम जपती रही। खेलते खेलते सहसा एक चूहेकी दृष्टि बिल्ली मौसीपर पड़ी। 'चूं चूं चूं चूं!' उसने अन्य सब चूहोंको सावधान कर दिया। लेकिन तभी वह यह देखकर ठिठक गया कि बिल्ली मौसी अपने स्थानसे हिली भी नहीं! चुपचाप बैठी माला फेर रही है। फिर एक एक कर सारे चूहे आंगनमें जमा हो गए।

बिल्ली मौसीका यह रंग देखकर सभीको आश्चर्य हुआ। आखिर बिल्ली मौसी कबसे पूजा-पाठ करने लगी? उनमें कानाफूसियां होने लगीं।

"बुढ़ापेमें आदमी संन्यास ले लेता है। शायद मौसीने भी अब संन्यास ले लिया हो!" एक चूहेने कहा।

"तुम ठीक कहते हो, बेटा!" बिल्लीने आंखें खोलकर सब चूहोंकी ओर मुंह करते हुए कहा। "जीवन भर पाप करती रही हूं। उन्हीं पापोंको धोनेके लिए गंगा-स्नानको हरिद्वार गई थी। कल ही लौटी। अब तो भगवानका ही आसरा है। अब मैंने मांसाहार बिलकुल त्याग दिया है। जय सियाराम!" कहकर बिल्लीने फिर दो क्षणके लिए आंखें मूंद लीं।

चूहे आश्चर्यसे बिल्ली मौसीका यह रूप देख रहे थे। कुछने कहा, "सब झूठ है, धोखा है, फरेब है! यह पूजा-पाठ पेट-पूजाके लिए हो रहा है।"

कुछने कहा, "बुढ़ापेमें सचमुच ही बिल्ली मौसीने संन्यास ले लिया है। इसमें झूठ और धोखेकी कोई बात नजर नहीं आती।"

इधर ये बातें हो रही थीं, उधर बिल्ली मौसीने एकाएक आंखें खोलकर फिर सबको संबोधित किया—"अरे हां, तुम्हारे लिए हरिद्वारसे प्रसाद भी तो लाई थी। यह लो," कहकर बिल्ली मौसीने गुड़की एक गोली, जो उसने स्वयं बड़ी मेहनतसे बनाई थी, चूहोंकी ओर फेंकी। एक चूहेने आगे बढ़कर गोलीको अपने मुंहमें संभाल लिया।

मन ही मन बिल्ली मौसी प्रसन्न हुई। चलो एक तो लगा ठिकाने! अब एक एक करके चार-छह हो जाएं, तो कई दिनोंकी भूख एक साथ मिटा ली जाए।

मगर जब उस चूहेने एकाएक तड़पकर वहीं सबके सामने ही दम तोड़ दिया, तो तेजीसे उसकी चुहिया आगे बढ़ी और उसकी पूंछ मुंहमें दबाकर भागती हुई अपने बिलमें खींच ले गई।

पृष्ठ १५ की चित्र पहेलियों के उत्तर

१– बिजली के बल्ब का पिछला भाग, २– मूंगफली, ३– बिजली का सॉकेट, ४– घड़ी की चेन, ५– कंघे के दांते

सारे चूहे देखते देखते रफूचक्कर हो गए। बिल्ली मौसीकी चाल सब समझ गए कि यह ढोंग किसलिए रचा गया था और क्यों गुड़की गोली खाते ही चूहेने दम तोड़ दिया!

बिल्ली मौसी फिर टापती रह गई। उसे अपने ऊपर बड़ा क्रोध आया कि उसने और चूहोंके लालचमें एक चूहेको भी हाथसे निकल जानेका मौका क्यों दिया? वह समझ गई कि अब यह तरकीब काम न आएगी। फिर भी उसने अगली रात पूरे आंगनमें गुड़की जहर मिली गोलियां यह सोचकर फैला दीं कि शायद भूले-भटके कोई चूहा इनमेंसे किसी एकको चख ले और अपने आपको ढीला छोड़ दे। यह सोचकर वह नजदीक ही घात लगाए छिपकर बैठ गई।

चूहोंने आंगनमें जैसे ही गोलियां फैली देखीं, तो समझ गए कि मौसीके दिमागमें फिर खुराफातने जोर मारा है। इसलिए वे उन गोलियोंके पास तक न फटके।

सहसा एक चूहेके दिमागमें एक तरकीब आई। उसने सोचा, बिल्ली मौसीसे इस वक्त मजेसे बदला लिया जा सकता है। वह भागता भागता नालीके रास्तेसे घरके अंदर जा पहुंचा और एक छोटी कटोरीमें दूध ले आया। फिर दूधमें उसने एक साथ दो-तीन गोलियां डाल दीं और कटोरी खींचता हुआ चुपकेसे आंगनमें रख आया।

दूधकी कटोरीको देखकर भूखी बिल्लीने बड़ी मुश्किलसे अपने ऊपर काबू पाया। क्योंकि वह चूहेरामका सारा करतब देख रही थी और समझ चुकी थी कि दूधकी एक ही घूंट उसे सदाके लिए हजको भेज देगी। इसलिए उसने दूधकी ओरसे दृष्टि हटा ली।

तभी बिल्ली मौसीको एकाएक न जाने क्या खयाल आया; वह अपने स्थानसे उठी और आंगनमें घूमने लगी। यह देखकर सारे चूहे अपने अपने बिलोंमें जा छिपे। यों मन ही मन वे प्रसन्न भी थे कि बिल्ली मौसी जैसे ही दूधके नजदीक पहुंचेगी, भूखी होनेके कारण एकदम बगैर सोचे-समझे दूध पी लेगी और इस शैतानकी नानीका सदाके लिए अंत हो जाएगा!

कुछ समय बीता, तो चूहोंने अपनी आशाके अनुरूप जैसा सोचा था वैसा ही पाया। उन्होंने

दूरसे देखा, कटो
है और बीच अ
लाश पड़ी है। चू
आवाजें निकालक
करते हुए विजय
किलकारी मारत
की लाशपर जा
के इंतजारमें अब
मोटे मुखिया
सब चूहोंके रोंग
पांव रखकर वा
बिल्ली मौ
कि कटोरीका
नालीमें उलट
मरनेका नाटक
धोखा दिया था
लेकिन जब
को यह शुभ सम
घरकी छतपर म
मच गई। उन्हों
शामत आई है!
यकीन ही न
हो गई और चू
उसी प्रकार आंख

छोटी छो

"क्यों जी,
जाने क्यों

दूरसे देखा, कटोरीका सारा दूध सफाचट हो गया है और बीच आंगनमें बिल्ली मौसीकी निर्जीव लाश पड़ी है। चूहोंके मुखियाने 'चीं चूं चीं चूं' की आवाजें निकालकर इस समाचारसे सबको सूचित करते हुए विजयका नारा लगाया और खुशीसे किलकारी मारता हुआ झपटकर बिल्ली मौसीकी लाशपर जा चढ़ा। बिल्ली मौसीने, जो मौकेके इंतजारमें अबतक दम साधे पड़ी थी, पलटकर मोटे मुखिया चूहेको धर दबोचा! यह देखकर सब चूहोंके रोंगटे खड़े हो गए और वे सिरपर पांव रखकर वापस भागे।

बिल्ली मौसीके जानेके बाद, चूहोंने देखा कि कटोरीका दूध बीच आंगनमें बहने वाली नालीमें उलट दिया गया था और मौसीने मरनेका नाटक करके सब चूहोंको जबरदस्त धोखा दिया था।

लेकिन जब अगले दिन, दो चूहोंने सब चूहोंको यह शुभ समाचार सुनाया कि बिल्ली मौसी घरकी छतपर मरी पड़ी है, तो उनमें खलबली मच गई। उन्होंने सोचा, फिर किसी न किसीकी शामत आई है! उन्हें मौसीके मरनेकी खबरपर यकीन ही न आया। लेकिन जब सांझ भी हो गई और चूहोंने देखा, मौसी उसी स्थानपर उसी प्रकार आंखें मंदे चित लेटी है,तो सब संशयमें पड़ गए। आखिर इतनी देर तक कोई नाटकीय ढंगसे मुर्दा होकर कैसे लेट सकता है? एक एककर सब उसके नजदीक गए। उन्होंने देखा कि मौसीकी सांस भी नहीं चल रही है। आखिर उन्हें यकीन हो गया कि वह स्वर्ग सिधार गई। लेकिन यह बात उन्हें बड़े ताज्जुबकी लगी। फिर भी सारे चूहे समाजके लिए यह खुशीकी बात तो थी ही। रात होनेपर चूहोंने जोर-शोरसे उत्सव मनाया। लेकिन बिल्ली मौसीके एकाएक स्वर्ग सिधार जानेका कारण कोई न जान सका।

दरअसल, जब चूहे मुखियाने देखा कि वह मौसीकी पकड़में आ गया है और अब किसी भी कीमतपर बच नहीं सकता, तो उसने जल्दी जल्दी पास ही आंगनमें पड़ी चार-छह गुड़की जहरीली गोलियां निगल ली थीं। बिल्ली मौसीका ध्यान इस ओर न जा सका कि उनके भोजनमें जहरकी गोलियां पहुंच चुकी हैं। इस प्रकार मुखिया चूहेने मरते समय भी अपनी बुद्धिका प्रयोग करके सारी जातिका भला किया था। मगर इस बातको चूहा जाति न जान सकी। इसी लिए मुखिया चूहेरामका कोई स्मारक भी न बन सका! ●

३, हनुमान चौक,
देहरादून (उ०प्र०)

छोटी छोटी बातें—

—सिम्स

"क्यों जी, हम तो रो रहे हैं और तुम्हें न जाने क्यों इस कदर हंसी सूझ रही है!"

"क्यों न सूझे? रोते समय तुम्हारी सूरत ही इतनी हास्यजनक हो जाती है!"

कहानी

kissekahani.com

अंधेरे में मुठभेड़

विद्वान् के. नारायणन्

शामके वक्त अपने परम मित्र व सहपाठी सुरेश बिदा लेकर किशोर स्कूलसे घर लौटा ही था कि मामा केशव शास्त्री आ पहुंचे। बोले, "किशोर, मेरा एक काम करोगे?"

केशव शास्त्री किशोरके पड़ोसी थे। उनके न पत्नी थी, न बाल-बच्चे। वह घरमें अकेले ही रहते थे। वह किसके मामा थे यह तो पता नहीं, पर मुहल्लेके सारे के सारे लोग उन्हें 'केशव मामा' कहकर पुकारते थे। गांवका बच्चा बच्चा उन्हें जानता था। उनकी बात सुनकर किशोरने कहा, "आज्ञा कीजिए, केशव मामा।"

"आज रातको मीनाक्षी देवीके मंदिरमें होने वाले उत्सवमें भाग लेने मैं मदुरै जा रहा हूं। कल शाम तक लौट आ जाऊंगा। वैसे तो घरके सारे दरवाजों और खिड़कियोंको बंद करके सदर दरवाजेपर ताला लगाकर जा रहा हूं, फिर भी जानते तो हो, आजकल चोरियां हो रही हैं। रातके वक्त अगर मेरे घरमें कहीं खटका हो, तो जाकर देख लेना। तुम तो बहादुर लड़के हो, चोर–उचक्केका डटकर सामना कर सकते हो। लो, यह रही सदर दरवाजेकी चाभी। देख लोगे न?" मामाने कहा।

मामा केशव शास्त्री जरूरतसे ज्यादा सावधान व्यक्ति थे। हर काममें सावधानी बरतते थे। बसमें जा रहे होते, तो जिस स्टॉपपर उतरना होता उसके पिछले स्टॉपपर ही सीटसे उठकर दरवाजेके पास आकर खड़े हो जाते, ताकि बसके रुकते ही उतर जाएं। सड़क पार करनी होती, तो दोनों तरफ अच्छी तरह देख लेते। जब तक आधे आधे फर्लांग तक सड़क सवारियोंसे साफ न हो जाती, तब तक खड़े इंतजार करते रहते। कभी ट्रेनसे जाना होता, तो कई बार बोर्ड देखकर तथा गार्डसे पूछकर तसल्ली कर लेते कि सही गाड़ी है या नहीं। गाड़ीपर सवार होनेके बाद भी यात्रियोंसे कई बार पूछे बिना उन्हें चैन नहीं पड़ता।

खैर, इसी अति सावधानीकी आदतके कारण उन्होंने किशोरको यह काम सौंपा था। जब किशोरने हामी भर ली, तो मामाने तसल्लीकी सांस ली और मदुरैके लिए रवाना हो गए।

रातमें करीब दस बजे होंगे। किशोर खापीकर अपने कमरेमें बैठा पढ़ रहा था। उसे कमरेकी खिड़कीसे केशव मामाके घरका कुछ भाग दिखाई दे रहा था।

तभी सहसा मामाके घरके पिछवाड़ेकी तरफ उसे कुछ आहट सुनाई दी। किशोरने अपनी टार्चकी रोशनी उस ओर डाली। फीकी रोशनीमें कांचकी खिड़कीके पीछे उसे कोई आकृति धीरे धीरे चलती दिखाई दी। किशोरके रोंगटे खड़े हो गए। यह आकृति किसकी होगी? दरवाजेपर ताला होनेपर भी मामाके मकानमें कौन घुस आया? कोई भूत-प्रेत तो नहीं? भूत-प्रेत तो होते ही नहीं! अवश्य कोई चोर होगा।

यह सोचकर वह उठा और चाभी व टार्च लेकर चल पड़ा।

वह धीरेसे मामाके घरके सदर दरवाजेपर पहुंचा। आवाज किए बगैर ताला खोलकर उसने अंदर प्रवेश किया। फिर दबे-पांव आगे बढ़ने लगा।

उसी वक्त उसे अगले कमरेमें किसीके चलनेकी धीमी आहट सुनाई पड़ी। चूंकि किशोर चोरको रंगे हाथों पकड़ना चाहता था, इसलिए उसने निश्चय किया कि जरूरत पड़नेपर ही अपनी टार्चका उपयोग करेगा। बस फिर अंधेरेमें टटोलते हुए वह धीरे धीरे चलकर

अगले कमरेमें जा
आहट उसे साफ
आहट कुछ दे
कभी रुक जाती।
किशोरको लगा कि
इधर-उधर घूम रहा
वाली पेटीकी तल
थोड़ी देर बा
समीप सुनाई देने
जगहपर खड़ा रहा
पास आ गई। वह
आया। इसलिए
कदम रखता हुआ
किंतु दुर्भाग्य

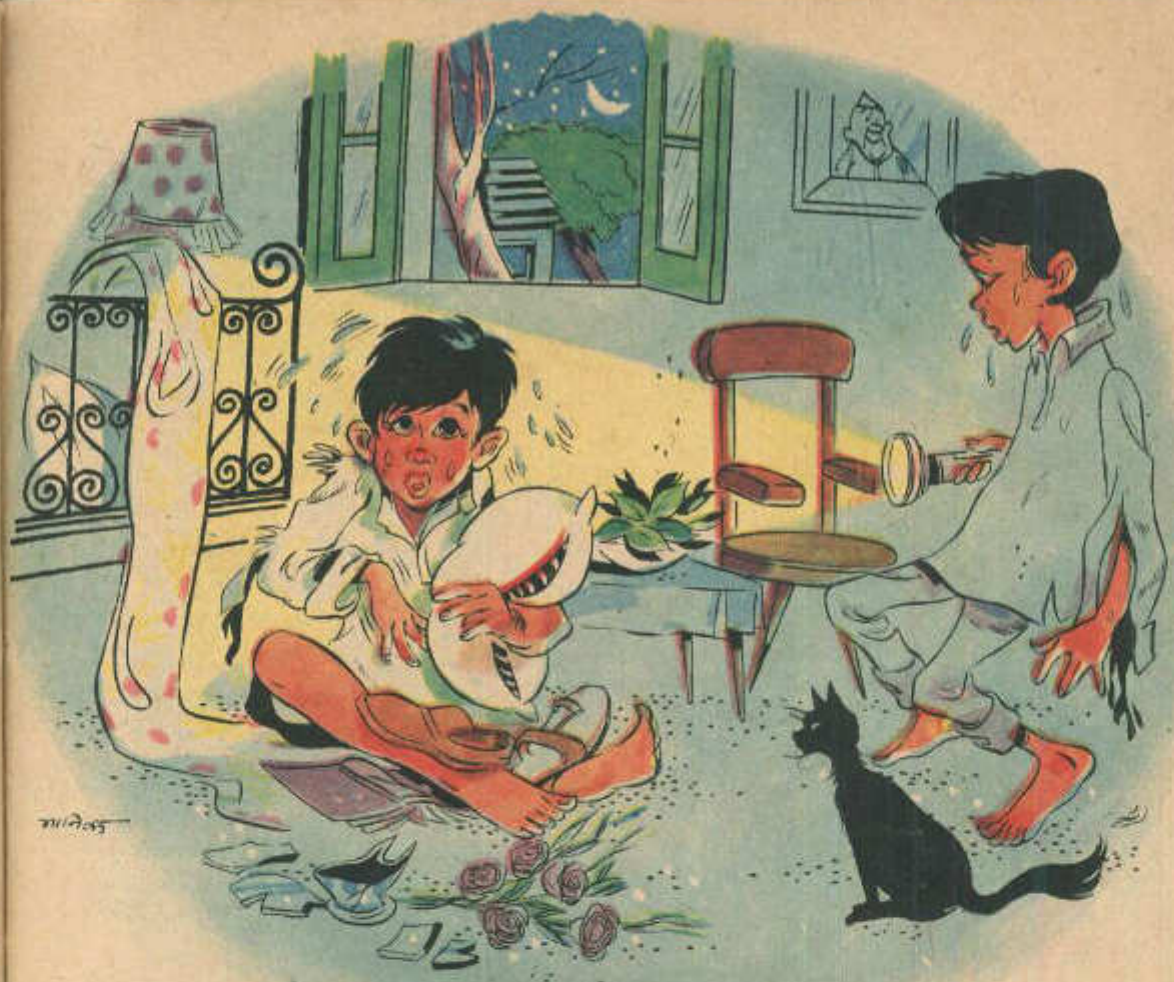

अगले कमरेमें जा पहुंचा। अब किसीके परोंकी आहट उसे साफ सुनाई देने लगी।

आहट कुछ देर लगातार सुनाई देती, कभी कभी रुक जाती। बादमें फिर शुरू हो जाती। किशोरको लगा कि चोर किसी चीजकी तलाशमें इधर-उधर घूम रहा है, शायद मामाजीकी रुपये-वाली पेटीकी तलाश में!

थोड़ी देर बाद वह आहट उसे बिलकुल समीप सुनाई देने लगी। किशोर सांस रोके अपनी जगहपर खड़ा रहा। अब आहट उसके और भी पास आ गई। वहीं खड़े रहनेसे उसे खतरा नजर आया। इसलिए वह दीवारसे सटकर धीरे धीरे कदम रखता हुआ आगे बढ़ने लगा।

किंतु दुर्भाग्यकी बात कि वहीं कोनेमें रखे हुए किसी बर्तनसे उसका पैर टकरा गया और बर्तन झनझनाहटके साथ लुढ़क गया।

आवाज होते ही कोई व्यक्ति किशोरपर झपटा। इस अप्रत्याशित हमलेसे किशोर क्षण-भरके लिए स्तब्ध रह गया। लेकिन शीघ्र ही संभलकर उससे भिड़ ही तो गया। घूंसे और थप्पड़ चलने लगे। किशोर वैसे काफी बलवान था, पर लगता था कि दूसरा व्यक्ति भी कम तगड़ा नहीं है। थोड़ी देर तक जबर्दस्त गुत्थम-गुत्था चलता रहा।

काफी मार-पीट होनक बाद हमलावर व्यक्ति सहसा बोल उठा— "चोर कहींका! सोचा था कि मुझे चकमा देकर चोरी करके चला जाएगा!"

पंचतंत्र

मां की ममता

बच्चो, जैसे तुम्हारी मां तुम्हें प्यार करती है, ठीक उसी प्रकार पशु भी अपने बच्चोंको प्यार करते हैं और संकट आनेपर खुदको खतरेमें डालकर भी उनकी रक्षा करते हैं।

एक गायने अपने बछड़ेकी एक लकड़बग्घे-से कैसे रक्षाकी यह सत्य घटना इस प्रकार है :

करीब दो वर्ष पहलेकी बात है, उन दिनों हमारे गांवमें लकड़बग्घेका बड़ा जोर था। लकड़बग्घा रातके समय गांवमें आकर अक्सर बछड़ों और कुत्तोंको उठा ले जाता था। वह लकड़बग्घा उन्हीं पशुओंका शिकार करता था जिनके सींग नहीं होते थे। रातके करीब आठ बजेका समय था, हमारे पड़ोसी-ने गायका दूध निकालकर बछड़ेको मांके थनोंको चूसनेके लिए छोड़ दिया। पड़ोसीका घर चारों ओरसे खुला हुआ था। दुष्ट लकड़बग्घा आया और बछड़ेको उठाकर चलता बना। तभी गायने रस्सी तुड़ाकर लकड़बग्घेका पीछा किया।

पड़ोसी जब थोड़ी देर बाद बछड़ेको बांधने आया, तो उसने देखा कि गाय और बछड़ा दोनों गायब हैं। उसे शायद शक हो गया कि बछड़ेको लकड़बग्घा उठा ले गया है और गाय भी लकड़बग्घेसे डरकर रस्सी तुड़ाकर भाग गई है। मददके लिए उसने हमें पुकारा। हम दो-तीन आदमी टॉर्च और लाठियां लेकर गाय और बछड़ेको ढूंढ़ने निकले।

ढूंढ़ते ढूंढ़ते हमने एक स्थानपर जंगलमें जो दृश्य देखा, तो एकदम भौचक्के रह गए। देखते क्या हैं कि बछड़ा गायके पेटके नीचे खड़ा है। गाय लकड़बग्घेको सींगोंसे मार मार-कर अपने बच्चेसे दूर रख रही है। लेकिन लकड़बग्घा किसी भी प्रकार बछड़ेको गायसे छीननेपर आमादा है। हम सबने लकड़बग्घे-को मार भगाया और गाय तथा बछड़ेको लेकर घर आ गए। इस प्रकार गायने लकड़बग्घे-पर हमला करके अपने बछड़ेको छुड़ाया और जब तक हम वहां नहीं पहुंचे, लकड़बग्घेका डटकर मुकाबला करती रही।

—धनपालसिंह

हिंदी न्यूज विभाग, टाइम्स आफ इंडिया, बम्बई

किशोरको वह आवाज जानी-पहचानी-सी लगी। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने टार्चका बटन दबाया। टार्चकी तेज रोशनीमें उसने देखा कि जिस व्यक्तिसे उसकी भिड़ंत हुई थी वह तो उसका मित्र सुरेश है!

"अरे, तुम! यहां कैसे?" दोनों एक साथ चिल्ला उठे।

कुछ आश्वस्त होकर आपसमें बात करनेपर मालूम हुआ कि यह सब घपला केशव मामाकी अति सावधानीके कारण हुआ था। किशोरसे कह देने भरसे उन्हें तसल्ली नहीं हुई थी, इसलिए वह अपने घरके पिछवाड़े रहने वाले सुरेशसे भी घरका खयाल रखनेको कह गए थे और उसे पिछवाड़ेके दरवाजेकी चाभी दे गए थे। सुरेश तो मामाजीसे भी बढ़कर सावधानी बरतने वाला निकला। रातमें लगभग दस बजे उसे खयाल आया कि कहीं मामाजी घरके दरवाजों और खिड़कियों-को बंद करना न भूल गए हों! इसलिए वह अपना शक दूर करनेकी गरजसे पिछवाड़ेका दरवाजा खोलकर घरके अंदर दाखिल हुआ था।

मामाजीकी इस अति सावधानीके कारण हुए गोलमालपर दोनों मित्र हंस हंसकर लोट-पोट हुए जा रहे थे। और ठीक उसी वक्त मामाजी, इस वाकयेसे बिलकुल बेखबर, देवीजीके जुलूस-के साथ चल रहे थे और लोगोंसे पूछ रहे थे कि अगले दिन गाड़ी कब रवाना होने वाली है! ●

टी. सी. २० / ९४ गंधारी अम्मा कोइल रोड,
पुथेंचंयाई, त्रिवेंद्रम–१

कहानीकार
बिल्लीके साथ
पैरोंकी सुंदरतापर

उपन्यासकार
नगरकी सड़कोंपर
गिनते चलना था
दिन भी नागा नहीं

उपन्यासकार
कागजपर नहीं लिख

प्रकाशित होता, तो
खरीदते थे।

कहानीकार राब
सुनकर प्रसन्न हो
था कि बांसुरीके स्व
जाग उठती हैं।

कहानीकार मोप
कि वह कमरेकी द
सिर चक्कर खा रहा

प्रवाह रुकने लगता

कवि ब्राउनिंग क
वह सदा अपने पांव
थे, जिससे उनकी
गए थे।

कहानीकार एडगर एलन पो अपनी बिल्लीके साथ सोते थे, क्योंकि उन्हें उसके पैरोंकी सुंदरतापर अत्यंत गर्व था।

•

उपन्यासकार एमिल जोलाका स्वभाव नगरकी सड़कोंपर लगे गैसके खंभोंको गिनते गिनते चलना था। उन्होंने इस कार्यमें एक दिन भी नागा नहीं किया।

•

उपन्यासकार अलेग्जेंडर ड्यूमा कभी सफेद कागजपर नहीं लिखते थे, चाहे वह कितना ही बढ़िया क्यों न हो। वह आसमानी रंगके कागजपर उपन्यास, पीले रंगके कागजपर कविता और गुलाबी रंगके कागजपर लेख लिखते थे। जब उनका कोई नया ग्रंथ प्रकाशित होता, तो वह एक नया चित्र अवश्य खरीदते थे।

•

कहानीकार राबर्ट लुई स्टीवेंसन बांसुरी सुनकर प्रसन्न हो उठते थे। उनका कथन था कि बांसुरीके स्वरोंसे उनकी सुप्त भावनाएं जाग उठती हैं।

•

कहानीकार मोपांसाको सदैव ऐसा लगता कि वह कमरेकी दूसरी ओर हैं और उनका सिर चक्कर खा रहा है।

•

डॉ. जान्सन लिखते समय अपनी पालतू बिल्लीको मेजपर बिठा लिया करते थे। यदि कभी बिल्ली वहां न होती तो उनकी लेखनीका एकाएक प्रवाह रुकने लगता था।

•

कवि ब्राउनिंग कभी स्थिर नहीं बैठ सकते थे। वह सदा अपने पांव इधर-उधर घिसते रहते थे, जिससे उनकी दरी तकमें छेद हो गए थे।

टालस्टाय केवल सुबहके समय लिखते थे। वह ऐसा मानते थे कि लेखकके मनमें बैठा आलोचक सवेरे आंखें खोले रहता है। रातको उसकी आंखें झपक जाती हैं और रचना घटिया हो जाया करती है।

•

मार्क ट्वेन औंधे मुंह लेटकर लिखते थे। बैठकर लिखनेसे उन्हें नींद आ जाती थी।

•

विक्टर ह्यूगो हमेशा खड़े होकर लिखते थे। उनकी मेज कंधों तक ऊंची थी। वह लिखते जाते थे और जो पन्ने भर जाया करते, उन्हें नीचे फर्शपर डालते जाते थे।

—देवेंद्रराज 'अंकुर'

एफ १६६/२ राजौरी गार्डन, नई देहली–२७

घरकी दीवारके पीछे, खिड़कीके नीचे बेचारा कपड़ेका पिल्ला सवेरेसे उदास बैठा है!

लोग आ-जा रहे हैं, लेकिन उसपर किसीने भी ध्यान नहीं दिया है। एक थोड़े-से नुक्सकी वजहसे किसीकी कदर इतनी घट जाया करती है, वह पहले नहीं जानता था। उसके पांच थे, नाक थी, आंखें थीं—सभी कुछ तो था। नहीं थे, तो सिर्फ दो कान ही तो नहीं थे। इसमें उसका क्या कसूर था। यह तो मिन्नीकी गलती थी, जिसने उसके दोनों कान जड़से उखाड़ फेंके थे। अपने दोनों कानोंको याद करके वह रुक रुककर रोने लगा।

जिस दिन वह मिन्नीके घर आया, उस दिनसे घरसे निकाले जाने तककी सारी बातें एक एक करके उसे याद आने लगीं।

पुसीके खिलौनेके साथ वह मिन्नीके घर आया था। मिन्नीके साफ-सुथरे घरको देखकर उसे बड़ी खुशी हुई थी। तभी नीले रंगकी फ्रॉक पहने मिन्नी वहां आई थी और उसे उसने अपने हाथमें उठा लिया था। बड़ी प्यारी-सी बच्ची है मिन्नी। तब वह यह नहीं जानता था कि मिन्नीकी गंदी आदत भी है।

कहानी

खिलौना खोया क्यों?

kissekahani.com

मिन्नीने उसे अच्छी तरह देखभालकर एक लकड़ीकी बड़ी पेटीमें डाल दिया। उस पेटीमें उसे कई अन्य खिलौने भी नजर आए। रेलगाड़ी, मोटर, टीनका हाथी, मोटा चीनी गुड्डा और

गुड़िया। उन्होंने उससे पहले हाथ मिलाया, फिर हंसने लगे। वह भी उनके साथ हंसने लगा। हंसनेके बाद वे सब खिलौने रोने लगे। इसपर उसे बड़ा ताज्जुब हुआ।

उसने चीनी गुड्डेसे पूछा, "आप पहले हंसे और फिर रोए क्यों?"

"इसका एक कारण है, पिल्लेजी," वह बोला

"क्या कारण है? मुझे भी तो बताइए," उसने पूछा।

चीनी गुड्डा कहने लगा, "हमारी मालकिन मिन्नी बड़ी सुंदर बच्ची है। उसके साथ खेलकर हम बहुत प्रसन्न होते हैं। यह एक अच्छी बात है, इसलिए हम हंसे। इसके अलावा तुम्हारे यहां आ जानेसे हमारी तादाद बढ़ी। इसकी हमें खुशी हुई। लेकिन मिन्नीकी एक बड़ी गंदी आदत है। वह अपने खिलौनोंसे बहुत लापरवाहीसे खेलती है। इसी लिए हम रोए।"

फिर चीनी गुड्डे और गुड़ियाने उसे अपनी टूटी नाक दिखाई, हाथीने अपनी टूटी सूंड़ दिखाई। इंजनके पहिए गायब थे। मोटरके पुर्जे नहीं थे। उन सबकी बुरी हालत थी। खिलौनों-को ऐसी हालतमें देखकर वह मनमें सहम गया। वह सोचने लगा, अब न जाने उसके साथ क्या होगा! यहां तो हाथीकी सूंड़ गायब है, गुड्डेके नाक नहीं है। मोटरके पुर्जे नहीं हैं। उसे अपने भविष्यकी चिंता खाने लगी। वह किसी तरह इस घरसे भाग जाना चाहता था, पर मजबूर था। कई दिन तक वह खिलौनोंकी पेटीमें पड़ा रहा।

पेटीमें पड़े रहनेके कारण उसका दम घुटने-सा लगा। तबीयत ऊबने लगी। कई दिनसे उसने सूरजकी रोशनी नहीं देखी थी। खुली हवाका सेवन नहीं किया था। ठीक यही हालत पेटीमें बंद उसके दूसरे साथियोंकी भी थी। वह वहांसे भाग निकलनेकी तरकीबें सोचता। वह किसी ऐसे बालकके घर रहना चाहता था, जो उसके साथ खेले; अपनी तोतली भाषामें उससे मीठी मीठी बातें करे, तो वह भी अपनेको धन्य समझे।

• हमीदुल्लाखां

एक दिन उसे ऐसा लगा कि पेटीका दरवाजा खुल रहा है। मिन्नीने पेटीका दरवाजा खोला और खिलौनोंकी तरफ देखने लगी। उसने भी निगाह उठाकर मिन्नीकी तरफ देखा। मिन्नीने उसे अपने हाथमें उठा लिया और पेटीका दरवाजा बंद कर दिया। वह सोचने लगा, देखें अब क्या होता है। या तो जान जाती है या रहती है। कुछ भी हो, मिन्नीके साथ खेलनेमें उसे खुशी होगी।

मिन्नीने उसके दोनों कानोंको बड़े गौरसे देखा। शायद उसे कान ही ज्यादा अच्छे लग रहे थे। उसने उसके दोनों कान अपने दोनों हाथोंमें पकड़ लिये और फिर वह उसे दाएं-बाएं जोर जोरसे झुलाने लगी। वह तकलीफसे कराह उठा। मिन्नीकी जगह अगर कोई दूसरा बालक होता, तो वह उसे काट लेता। वैसे भी मिन्नी आज पहली बार ही तो उससे खेल रही थी। इसलिए वह खामोश रहा। मिन्नीने उसके कान नहीं छोड़े। अब वह उसके कान उमेठ रही थी। उसका जी हुआ कि वह जोर जोरसे भौंके, लेकिन भौंकनेके लिए उसने यह समय उचित नहीं समझा। वह यह सब ज्यादती चुपचाप बर्दाश्त कर गया।

मिन्नी उसके कान खींचती हुई उसे अपनी मम्मीके पास लाकर बोली, "देखो, मम्मी, स्कूलमें बहनजी इसी तरह हमारे कान खींचती हैं।"

सुनकर उसका मन हुआ कि जोरसे चीख-कर कहे: 'अगर तुम्हारे स्कूलमें कान खिंचते हैं, तो जरूर किसी शरारतपर ही ऐसा किया जाता होगा। मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है, जो मुझे यह सजा दे रही हो?'

आखिर उसके कानोंके प्रति मिन्नीका यह प्यार रंग लाया। और सिर्फ आधे घंटेके भीतर भीतर ही उसके दोनों कान उसके शरीरसे गायब थे! वह रोने लगा।

कान उखड़नेके बाद मिन्नीने उसे गौरसे देखकर कहा, "कितना भद्दा लग रहा है! ऐसे मनहूसके साथ कौन खेले!"

सामने अलमारीमें लगे शीशेमें उसने अपनी शक्ल देखी। सचमुच दोनों कान उखड़ जानेसे उसके चेहरेकी शोभा जाती रही थी।

खेल खेलमें मिन्नीने उसे खिड़कीसे बाहर फेंक दिया। यह उसने जानबूझकर किया था। उसने कहा था, "तुम्हारी शक्ल बिगड़ गई। अब मैं तुम्हें अपने खिलौनोंमें नहीं रखूंगी।" और उसने उसकी दोनों पिछली टांगें पकड़कर उसे खिड़कीसे बाहर फेंक दिया। उसने भी सोचा कि भाग सकते हो तो भागो, वरना इस शरीर लड़कीके हाथों दोनों पिछली टांगें भी जाती रहेंगी।

खिड़कीसे बाहर आते ही उसे थोड़ी खुशी हुई। उसने चैनकी सांस ली। चलो, एक शरीर लड़कीसे पीछा छूटा!

अब वह काफी देरसे खिड़कीके नीचे पड़ा है। कुछ देर पहले एक बिल्ली उसके पास आई थी। वह उसे सूंघकर चल दी। ठीक उससे मिलता-जुलता एक कुत्तेका पिल्ला भी वहांसे निकला था। वह उसे देखकर गुर्राने लगा था। तब उसने कहा था —"लड़ो मत। मैं सचमुचका पिल्ला नहीं हूं! मैं तो कपड़ेका बना खिलौना हूं, भाई।" यह सुनकर कुत्तेके पिल्लेको खुदपर आश्चर्य हुआ था। उसकी आंखोंने धोखा खाया था न, इसलिए!

अब वह सोच रहा था, कोई न कोई बच्चा वहांसे जरूर निकलेगा और उसे अपने साथ ले जाएगा। सुबहसे दोपहर हो रही थी और वहांसे कोई बच्चा या तो गुजरा ही नहीं था या किसीने उसपर ध्यान नहीं दिया था।

"मुझे कोई जानवर उठाकर न ले जाए?" उसे अपने भविष्यकी चिंता सताने लगी। "अगर ऐसा हुआ, तब तो मेरी हत्या ही हो जाएगी। जानवरके हाथ पड़नेकी बजाए इनसानके हाथ पड़ना अच्छी बात है।"

वह क्या करे, वह कुछ भी समझ नहीं पा रहा था। क्या उसका कोई भी कदरदान नहीं है? वह इस तरह यहां बेकार पड़ा रहना नहीं चाहता था। किसीके काम आना चाहता था।

वह वहीं पड़ा रहा और मिन्नीको मन ही मन कोसता रहा। कैसी लड़की है, यह मिन्नी भी! अपने खिलौनोंके साथ कितनी लापरवाही बरतती है! कितना बुरा सलूक करती है! अगर कोई उसके दोनों कान गायब कर दे, तो उसे कैसा लगेगा?

अभी वह यह सोच ही रहा था कि एक बच्चा वहांसे निकला। उसने उसे वहां पड़ा हुआ देखा। वह खुशीसे बोल पड़ा, "अरे यह तो कपड़ेका पिल्ला है! खिलौना!"

बच्चेने उसे अपने हाथमें उठा लिया। "सब कुछ ठीक है, बस दो कान ही नहीं हैं, इसके," वह कहने लगा। बच्चा उसे अपने घर ले आया। घर लाकर अपनी मम्मीसे उसने उसके लिए दो कान सिलवाए और उन्हें सही जगह टंकवा दिया। कपड़ेका पिल्ला बड़ा खुश हुआ।

'कितना समझदार है यह बालक,' वह सोचने लगा। अब वह इसके साथ खूब खेलेगा। इस तरह वह आखिर किसीके काम तो आएगा, वरना कूड़ेके ढरमें बेकार ही पड़ा रहता और एक दिन नगरपालिकाकी गाड़ी उसे उठाकर ले जाती।

कान लगते ही पिल्लेकी सूरत ही बदल गई। बच्चेने उसे पुचकारा, प्यार किया और उसे अपने दोस्तोंको दिखाने चल पड़ा।

पिल्लेने मन ही मन बच्चेको धन्यवाद दिया। अब वह खुदको दुनियाका सबसे खुशनसीब खिलौना समझ रहा था, क्योंकि दूसरोंके काम आनेमें ही जीवनकी सच्चा आनंद है! ●

अनुवाद शाखा, विधि विभाग,
राजस्थान सचिवालय, जयपुर–५

राजू : "अरे अ
हो गया! दवा
अनिल : "
गिलास उठा रहा थ
राजू : "तेरा
तू भागा क्यों नहीं
परमेश : "तु
जानेपर कभी भी
राजू : "ओ
भागें नहीं तो क्या ज
परमेश : "मैं
आग लग गई थी।

कंबल ओढ़ लिया,
राजू : "यह कै
परमेश : "बात
है जब उसे आक्सी
आक्सीजन हवाको
अपने आप बुझ
आक्सीजन हवा आ
राजू : "सामने
थी तब किसीने भी
अनिल : "वे
थे। बड़े जोरसे पानी
परमेश : "ल
आगको पानीसे ही
हवा रुकती है, साथ ह

एक वार्तालाप

आग-बुझक्कड़

—लखन पस्सौलिया

राजू : "अरे अनिल, तेरी बांहपर यह क्या हो गया! दवा क्यों लगा रखी है?"

अनिल : "क्या बताऊं, अंगीठीके पाससे गिलास उठा रहा था कि कमीजने आग पकड़ ली!"

राजू : "तेरा हाथ तो कुहनी तक जल गया! तू भागा क्यों नहीं?"

परमेश : "तुम दोनों बुद्धू हो। आग लग जानेपर कभी भी भागना नहीं चाहिए।"

राजू : "ओ हो हो, बड़े आए बुद्धिवाले! भागें नहीं तो क्या जल मरें?"

परमेश : "मैंने देखा है, ताऊजीकी कमीजमें आग लग गई थी। वह भागे नहीं। बस ऊपरसे

कंबल ओढ़ लिया, तभी सारी आग बुझ गई।"

राजू : "यह कैसे?"

परमेश : "बात यह है कि आग तभी लगती है जब उसे आक्सीजन हवा मिलती है। अगर आक्सीजन हवाको बंद कर दिया जाए, तो आग अपने आप बुझ जाएगी। कंबल डाल देनेसे आक्सीजन हवा आग तक नहीं पहुंचती।"

राजू : "सामनेके घरमें किवाड़ोंमें आग लगी थी तब किसीने भी कंबल नहीं डाला!"

अनिल : "वे आग बुझाने वाली मोटरें लाए थे। बड़े जोरसे पानीकी पिचकारी छूट रही थी।"

परमेश : "लकड़ी या मकानोंमें लगी हुई आगको पानीसे ही बुझाया जाता है। पानीसे हवा रुकती है, साथ ही लकड़ी ठंडी हो जाती है।"

राजू : "फिर हम भी अपनी आगको पानीसे बुझा सकते हैं, कंबल ओढ़नेकी क्या जरूरत?"

परमेश : "नहीं, ऐसी भूल कभी मत करना। जिस व्यक्तिको आग लगती है उसका शरीर गर्म हो जाता है। ऐसी हालतमें अगर पानी पड़ेगा, तो छाले उठ आएंगे। इसी लिए कंबल ठीक है।"

अनिल : "मैं समझ गया। अपनी तेलकी दूकानमें पानीकी बाल्टी रख दूंगा।"

परमेश : "भाई, समझो। तेलकी आग पानीसे नहीं बुझती। तेल पानीसे हल्का होनेके कारण पानीके ऊपर ही रहेगा और आग नहीं बुझेगी।"

अनिल : "तो, तेलकी आग बुझ ही नहीं सकती?"

परमेश : "बुझ क्यों नहीं सकती। सभी तरहकी आग एक ही तरीकेसे नहीं बुझाई जाती। तेलमें आग लगी हो, तो कार्बन डाय आक्साइडका झाग डालते हैं। यह झाग आक्सीजन हवाको रोक देता है और आग बुझ जाती है।"

राजू : "ऐसी दवाको तो हमने कहीं देखा नहीं। कहां होती है?"

परमेश : "यह बड़े बड़े दफ्तरों और कल-कारखानोंमें दरवाजेके पास दीवारपर टंगी रहती है। यदि यह दवा न हो, तो तेलकी आगके ऊपर मिट्टी-धूल फेंकना चाहिए। मिट्टी भी आक्सीजन हवाको तेल तक नहीं जाने देगी।"

अनिल : भई, तुम तो पूरे आग-बुझक्कड़ निकले। क्या ये सब बातें तुम्हारे ताऊजीने ही बतलाई हैं?"

परमेश : "हां, भैया, मेरे ताऊजी फायर आफिसर हैं, यानी आग बुझाने वाले अधिकारी।"

राजू : "तुमने तो बहुत अच्छी बातें बतलाईं। अब चलें।"

●

नागरी प्रचार सम्मेलन,
४८८ कॉलोनी आजाद नगर, दिल्ली ३३

पोलैंड के डाक-टिकटों पर

प्रागैतिहासिक जंतु

—गुरुचरण बोहरा

सुंदर, बहुरंगी और ज्ञानवर्द्धक डाक-टिकट प्रकाशित करने वाले राष्ट्रोंमें पोलैंडका अपना अनूठा स्थान है। १९६५ और १९६६ में इस राष्ट्रने प्रागैतिहासिक कालके जंतुओंके डाक-टिकटोंकी दो सुंदर मालाएं प्रकाशित की हैं।

प्रागैतिहासिक कालके कंकालोंके आधार-पर इन विचित्र जंतुओंके आकार-प्रकारकी कल्पना की गई है और उनकी जातियोंके अनु-रूप उन्हें नाम दिए गए हैं।

१९६५ की टिकट-मालामें दस टिकट हैं। २० ग्रोजीके टिकट (चित्र नं. १) पर 'धरासरट' (एडाफासौरस), ३० ग्रोजीके टिकट (चित्र नं.४) पर 'गुप्ताक्षक' (क्राईप्टोक्लीडस) और ४० ग्रोजीके टिकट (चित्र नं. २) पर 'दितिसरट' (ब्रांटोसौरस) जातियोंके जंतु चित्रित हैं।

'दितिसरट' दलदलमें रहता था और इसका वजन लगभग ३० टन होता था। यह शाका-हारी जंतु था।

६० ग्रोजीके टिकट (चित्र नं.५) पर 'मध्यसरट' (मैसोसौरस) और ९० ग्रोजीके टिकट (चित्र नं.३) पर 'वर्मसरट' (स्टेगोसौरस) जातियोंके जंतु अंकित हैं। वर्मसरटकी पीठ और पूंछपर कटारों जैसे तेज अंग होते थे। यह ३० फुट लंबा जंतु

बड़े मस्तकवाला तथा अत्यंत खतरनाक था।

१.१५ ज्लोतीके टिकट (चित्र नं.६) पर 'बाहुसरट' (ब्राकियोसौरस) जातिका जंतु चित्रित है। बाहुसरटकी अगली टांगें, पिछली टांगोंसे बड़ी होती थीं। यह जलमें तथा थलपर समान रूपसे रह सकता था।

१.३५ ज्लोतीके टिकट (चित्र नं.७) पर 'शूलसरट' (स्टाईराकोसौरस) चित्रित है। यह जंतु गैंडेके समान, परंतु उससे कई गुना लंबा और ताकतवर था। इसकी लंबाई २५–३० फुट होती थी।

३.४० ज्लोतीके टिकट (चित्र नं. ८) पर 'टोपीसरट' (कोरीथोसौरस) अंकित है। टोपीसरटकी पूंछ लंबी और भारी तथा पिछली टांगें बड़ी और अगली टांगें छोटी होती थीं। इसके सिरका आकार टोपीके समान होता था।

५.६० ज्लोतीके टिकट (चित्र नं. ९) पर 'महापुच्छसरट' (रैम्फारहाईन्कस) जातिका लंबी पूंछवाला पक्षी चित्रित है। महापुच्छसरटकी

लंबी चोंचमें दांत होते थे।

६.५० ज्लोतीके टिकट (चित्र नं. १०) पर 'दैत्यसरट' (टिरान्नोसौरस) का चित्र है। दैत्यसरटकी अगली बांहें टोपीसरटसे भी छोटी होती थीं, परंतु इसका आकार दैत्यके समान विशाल होता था। 'दैत्यसरट' प्रायः ६० फुट लंबा होता था। यह २३ फुट ऊंचा उठ सकता था।

१९६६ की टिकट-मालामें नौ टिकट हैं। २० ग्रोजीके टिकट (चित्र नं. ११) पर ३८ करोड़ वर्ष पुरानी 'भीम मीन' (डाईनाईचीथिस) और ३० ग्रोजी (चित्र नं. १४) पर ३७ करोड़ वर्ष पुरानी 'सुबलपक्ष' (यूस्थीनोप्टेरान) जातिकी विशालकाय मछलियां चित्रित हैं।

४० ग्रोजीके टिकट (चित्र नं. १५) पर ३५ करोड़ ५० लाख वर्ष पुरानी 'आवृतमीन' (इक्थियोस्टेगा) का चित्र है। आवृतमीन जलचर प्राणियोंका विकसित रूप है।

५० ग्रोजीके टिकट (चित्र नं.१२) पर बीस करोड़ वर्ष पूर्व विद्यमान 'शंकुदंतसरट' (मैस्टोडॉनसौरस) चित्रित है। इस जंतुके चबाने वाले दांत शंकुरूप तथा आगेकी ओर निकले हुए होते थे।

६० ग्रोजीके टिकट (चित्र नं. १६) पर छपे 'श्वहनुक' (साएनोनैथस) की ठुड्डी और तालु कुत्तेके समान होते थे। ये जंतु लगभग दो करोड़ बीस लाख वर्ष पूर्व धरतीपर विचरते थे।

२.५० ज्लोतीके टिकट (चित्र नं. १८) पर 'आद्यपक्षि' (आर्किओप्टेरिक्स) का चित्र है। लंबी पूंछ, चोंचमें दांत और पंखोंके समान अंगवाले पक्षीका यह पुरखा १४ करोड़ वर्ष पहले पृथ्वीपर रहता था।

तीन करोड़ वर्ष पूर्व विद्यमान जिस 'गर्ज गंडक' (ब्रांटोथीरियम) की भयानक गर्जनासे जंगल कांपते थे, उसका चित्रण ३.४० ज्लोतीके टिकट (चित्र नं. १७) पर किया गया है।

६.५० ज्लोतीके टिकट (चित्र नं. १३) को सुशोभित करने वाला 'असिदंत' (मैकेरोडस) एक करोड़ वर्ष पहले पृथ्वीका वासी था।

७.१० ज्लोतीके टिकट (चित्र नं.१९) पर छपा हुआ 'भीमगज' (मैमथस) केवल ५० हजार वर्ष पूर्व जंगलोंका राजा था। वर्तमान हाथी उसीका छोटा रूप है। ●

२ बी, स्ट्रीट १८, सैक्टर २, भिलाई–१ (म. प्र.)

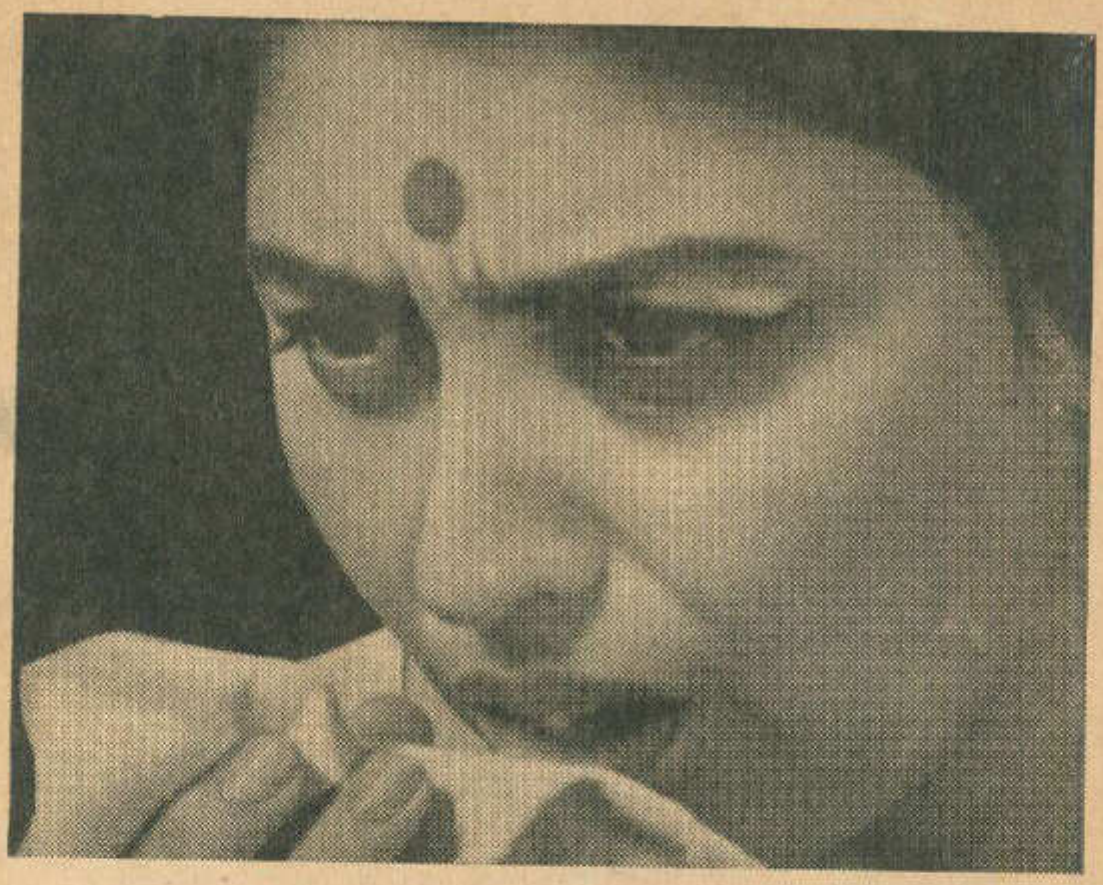

वॉटरबरीज़ कम्पाउण्ड

लाल लेबल

आराम के साथ-साथ रोग-निरोधक शक्ति भी देता है!

खाँसी और सर्दी-जुकाम की तुरंत रोक-थाम करनी चाहिए—
वर्ना शरीर कमज़ोर हो जाता है, उसकी रोग-निरोधक
शक्ति घट जाती है। ऐसी हालत में कोई दूसरी बीमारी भी
पैदा हो सकती है।
वॉटरबरीज़ कम्पाउण्ड लेने से भूख बढ़ती है, शरीर में
फिर से ताक़त आ जाती है और बीमारियों का मुक़ाबला
करने में मदद मिलती है। इसमें मिले 'क्रिओसोट' व
'गायकॉल' से खाँसी और सर्दी-जुकाम में आराम मिलता है।

ताक़त और तन्दुरुस्ती के लिए वॉटरबरीज़ कम्पाउण्ड लीजिए!

वॉर्नर-हिन्दुस्तान लिमिटेड

स्वाभिमान एक शेर का

(पृष्ठ २७ से आगे)

चिल्लाते हुए बोला, "तुम इतने डरपोक हो, मुझे ऐसा मालूम न था। वरना मैं अपने लड़केका रिश्ता कभी भी यहां न करता। अरे, तुम मेरे कुत्तेको देखकर इतना डर गए। चलो, जल्दीसे बाहर आओ।"

यह सुनकर धीरे धीरे गांवके लोग अपने घरोंसे बाहर निकलकर जमा होने लगे। ब्राह्मणने शेरको एक कोनेमें आदरपूर्वक बिठा दिया। खूब धूम-धामसे शादी हुई। रात भर मेहमानोंने आराम किया और सुबह होते ही बारात वापस चल पड़ी। सभी ओर ब्राह्मणके लड़केकी शादीकी चर्चा थी।

घर पहुंचकर ब्राह्मणने सब नाते-रिश्तेवालोंको बिदा किया। उसके बाद वह शेरके पास गया और बोला, "महाराज, जल्दी जल्दीमें आदर-सत्कारमें यदि किसी प्रकारकी कमी रह गई हो, तो मुझे क्षमा कीजिएगा। आप तो अभी दो-चार दिन यहीं हमारे पास रहेंगे।"

"नहीं, नहीं, अब मैं चलूंगा। मैं आदमियोंकी बस्तीमें ज्यादा दिन कैसे रह सकता हूं? फिर कभी आऊंगा। आप जरा एक कुल्हाड़ी ले आइए," शेर बड़े प्यारसे बोला।

"क्या? . . . कुल्हाड़ी! . . . क्या कीजिएगा, महाराज, कुल्हाड़ीका?" आश्चर्यचकित होकर ब्राह्मणने प्रश्न किया।

"आप ले तो आइए।"

ब्राह्मण झटसे कुल्हाड़ी ले आया।

शेर बोला, "आप पूरी ताकतसे इस कुल्हाड़ीका वार मेरे सिरपर कीजिए।"

"महाराज, क्या कह रहे हैं आप? कुल्हाड़ीका . . .वार . . . आपके सिरपर! नहीं, नहीं, ऐसा नहीं हो सकता।"

"मैं जैसा कहता हूं वैसा कीजिए, नहीं तो अभी अभी सारे गांवका काम तमाम कर दूंगा," शेर गुस्सेमें बोला।

ब्राह्मणने डरते डरते कुल्हाड़ी उठा ली और आंख मूंदकर शेरके सिरपर दे मारी।

कुल्हाड़ी लगते ही शेरके सिरसे खूनकी धार बहने लगी। उसके बाद शेर बिना कुछ कहे जंगलकी ओर चल दिया।

धीरे धीरे दिन बीतने लगे। वर्ष बीत गए। सब कुछ ठीक चलता रहा। एक दिन वह भी आ गया जब ब्राह्मणके पास धन खत्म होने लगा। उसने सोचा फिर 'यजमान' के पास चलना चाहिए।

सुबह वह जंगलकी ओर चल दिया। शामके समय उसे शेर जंगलकी ओरसे आता नजर आया। उसने शेरके गलेमें फूलोंकी माला डाली और दोनों गुफाके अंदर जाकर बैठ गए। रातके समय दोनोंमें बातचीत होती रही।

सुबहके समय शेरने ब्राह्मणको अपने पास बुलाया और कहा, "जरा देखिए, मेरे सिरपर आपने बहुत दिन पहले कुल्हाड़ीसे वार किया था,

(शेष पृष्ठ ५५ पर)

हमारी पसंद
प्रतियोगिता नं. ११ का परिणाम

'हमारी पसंद' प्रतियोगिता नं. ११ के अंतर्गत 'पराग' के नवंबर अंकमें प्रकाशित कहानियोंके बारेमें हमने जानना चाहा था कि अपनी पसंदके विचारसे कौन कौन-सी कहानी तुम पहले, दूसरे, तीसरे आदि नंबरोंपर रखोगे। सर्वशुद्ध हल किसी भी प्रतियोगीका नहीं निकला। जिन चार बच्चोंकी पसंदका क्रम श्रेष्ठ कहानियोंके बहुमतसे अधिकतम मेल खाता हुआ निकला उनके नाम और पते इस प्रकार हैं :

- **राकेशचंद्र तिवारी, द्वारा– श्री के. के. तिवारी, प्लानिंग आफिस, सी. ओ. डी., कानपुर (उ. प्र.)।**
- **सुरेन्द्रपालसिंह, द्वारा– स. बलवंतसिंह, सती मोहल्ला, रुड़की (उ.प्र.)।**
- **डी. आई. जी. सिंह, कक्षा : ८– बी. जी. आई. सी., उरई, जिला–जालौन (उ. प्र.)।**
- **सुदामाप्रसाद, द्वारा प्यारेलाल छिपोलया, किराना मर्चेण्ट, रहली, जिला–सागर (म. प्र.)।**

सही हल वाली कहानियोंका क्रम इस प्रकार है :

१–एक और इम्तहान, २-चतुर बंदर, ३-चांद की सैर, ४-बोलने वाली बिल्ली, ५-दादाजी जासूस बने, ६-चीनका हमला, ७-पहली जीत का झंडा, ८-एक जंजीर जो टूट गई, ९-राजा का मुकुट, १०-दीप शिखा, ११-धरती और पर्वत।

खिलौनों का डिब्बा

श्वान-स्नेही सिस्टर

— अरुणकुमार

kissekahani.com

लो बच्चो, इस बार हम तुम्हारी भेंट सिस्टर चोखानीसे कराते हैं।

सिस्टर चोखानी बड़ी सुंदर हैं और इनके पास एक सुंदर-सा कुत्ता भी है, जिसे यह मोती कहकर पुकारती हैं। सिस्टर अपने मोतीको बड़ा प्यार करती हैं। जब देखो तब वह उसे गोदीमें लिए बैठी रहती हैं और दुलराती रहती हैं।

अगर तुम्हें यकीन न आए, तो यह मजेदार खेल बनाकर अपने खिलौनोंके डिब्बेमें रखो।

बनानेकी विधि यह है:

सामनेवाले पृष्ठपर सिस्टर चोखानी और उनकी गोदीमें बैठे मोती कुत्तेका जो चित्र दिया हुआ है, उसे हाशिएकी सीधी रेखापर काटकर 'पराग' से अलग कर लो। इसके साथ सिस्टरका एक हाथ भी अलगसे दिया हुआ है। इसे भी अलग कर लो।

दोनों चित्रोंको पोस्टकार्ड जितने मोटे गत्ते या दफ्तीपर, इनके पीछे गोंद या लेई लगाकर सफाईके साथ चिपका लो। दोनों चित्रोंको सदाकी भांति मोटी किताबोंके बीच दबाकर रख दो, जिससे सूखनेपर टेढ़े न मिलें। चार-छह घंटे बाद ये सूख जाएंगे। इन्हें निकल लो।

सिस्टर चोखानीकी दाहिनी बांहके पास जो दानेदार रेखा दी हुई है, उसे ब्लेडकी सहायतासे आरपार काट लो। (देखो चित्र नं. १ इसी पृष्ठ पर।) इसके बाद, इसी चित्रके अनुसार सिस्टर-का हाथ चित्रके पीछेसे आगे निकाल लाओ और कुत्तेके सिरपर जमा दो। (देखो चित्र नं. २ इसी पृष्ठ पर।)

इसी चित्रके अनुसार, जब तुम चित्रके फ्रेम-से बाहर निकले हुए हाथको, अपने हाथसे ऊपर-नीचे करोगे, तो सिस्टर अपने प्यारे कुत्ते मोती-को थपकी देती हुई मालूम होंगी। देखो, थपकी पाकर कुत्ता कितने मजेसे आंखें टिमकाता उनकी गोदीमें बैठा है।

इस खेलको तुम अपने मित्रोंको भी दिखाओ

चित्र नं. १

चित्र नं. २

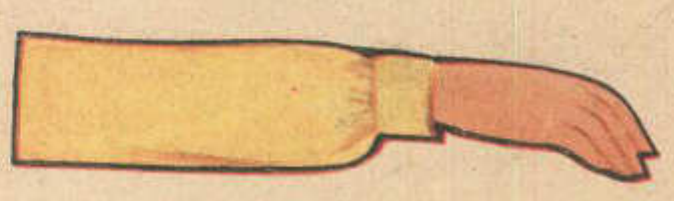

और उन्हें यह बताना न भूलो कि इसे तुमने अपने मधुर मासिक 'पराग' से काटकर बनाया है। 'पराग' में हर मास ऐसा ही एक सुंदर खेल बनानेके लिए दिया जाता है।

क्योंकि उसके पास कुछ पैरी की मिठाइयाँ हैं — इसलिये मेरी ओर कोई नज़र ही नहीं!

पैरी की मिठाइयों का लोभ संभालना मुश्किल है। यह बड़ी स्वादिष्ट और पुष्टिकारक होती है। मिल कर खाइये और लुत्फ उठाइये। पैरी की मिठाइयों से ज़िन्दगी में चार चाँद लग जाते हैं।

क्या आपने चखा है?
जिंजर कैप्स
लैक्टो बोन बोन्स
डेवन क्रीमी टॉफी
हेल्थ फ्रूट्स

Parry's

पैरीज़ — उच्चकोटि की मिठाइयाँ बनाने वाले

पैरीज़ कॉनफेक्शनरी लिमिटेड, मद्रास

वह चोट क्या अब
ब्राह्मण उस
कांपने लगा। उस
दिल धड़कने लगा
मरता क्या न
हुए वह शेरके पास
देखते हुए बोला,
बिलकुल ठीक है।'
शेर झुंझलाते
आपने काफी जोर
पर किया था, फि
हो गया। परंतु अ
किया था, वह अभ
बना हुआ है।
"जरा सो

भोलू भाई

सही उत्तर :

१–सिक्का
या कागज व कि
मोमबत्तीका मो
उसपर जमाकर

२–धागा
गया था। जल
चिपके रहेंगे

३–पारेकी
बिना, उल्टी क
जाए। चीनी पा
भारी होनेके का
द्वारा पैदा हुए
पानी भर जाए
भोलू भाई अपने
तीनों उत्तर सही

१-राकेश
बाल, आगरा;
४-अशोककुमार
वासुदेवसिंह, रो
७-अजयकुमार
राय, आगरा;
१०-पद्मा गर्ग,
अग्रवाल, फरीद

स्वाभिमान एक शेर का (पृष्ठ ५१ से आगे)

वह चोट क्या अब भी बाकी है?"

ब्राह्मण उस दिनकी याद करके थर-थर कांपने लगा। उसकी जीभ सूखने लगी। उसका दिल धड़कने लगा।

मरता क्या न करता! अपने आपको संभालते हुए वह शेरके पास तक गया और उसका सिर देखते हुए बोला, "महाराज... अब तो चोट बिलकुल ठीक है।"

शेर झुंझलाते हुए बोला, "ब्राह्मण देवता, आपने काफी जोरसे कुल्हाड़ीका प्रहार मेरे सिर-पर किया था, फिर भी वह कुछ ही दिनोंमें ठीक हो गया। परंतु अपनी जुबानसे जो प्रहार आपने किया था, वह अभी भी मेरे हृदयपर ज्योंका त्यों बना हुआ है।

"जरा सोचिए, मैं जंगलका राजा हूं। मनुष्य, पशु, पक्षी सब मुझे देखकर थर-थर कांपने लगते हैं, लेकिन आपने सैकड़ों लोगोंके बीच मुझे 'कुत्ता' कहकर अपमानित किया! यदि मैं चाहता तो आप सहित वहां उपस्थित सभी लोगोंका मिनिटोंमें काम तमाम कर देता। परंतु मैंने ऐसा करना उचित नहीं समझा, क्योंकि मैं अतिथिके रूपमें वहां गया था।

"ब्राह्मण देवता, आपको भी मैंने केवल यह समझ कर छोड़ दिया था कि आप ब्राह्मण हैं और ब्रह्म-हत्याका पाप मैं अपने सिरपर लेना नहीं चाहता था। अब आप आखिरी बार जितने जेवर ले जाना चाहते हों ले जाएं। बादमें फिर कभी मुझे जंगलमें नजर आ गए, तो आप जीवित वापस नहीं जा सकते!" ●

सी-२१, मीर दर्द लेन, नई दिल्ली।

भोलू भाई की भूलभुलैया नं. २

परिणाम

सही उत्तर :

१-सिक्का रूमालसे, दस्ताना पहनकर या कागज व किसी अन्य वस्तुकी सहायतासे या मोमबत्तीका मोम उसपर टपकाकर व मोमबत्ती उसपर जमाकर प्लेटसे अलग किया जा सकता है।

२-धागा नमकके घोलमें डालकर सुखाया गया था। जलनेपर भी नमकके कण आपसमें चिपके रहेंगे और पानीका बोझ संभाल लेंगे।

३-पारेकी बोतल, चीनीकी डाट हटाए बिना, उल्टी करके डमके छोटे छेदमें डाल दी जाए। चीनी पानीमें घुल जाएगी, पारा पानीसे भारी होनेके कारण डमरूमें बैठ जाएगा और उसके द्वारा पैदा हुए शून्य स्थानमें —पानी बोतलमें पानी भर जाएगा। उसे जल्दीसे निकालकर भोलू भाई अपने प्राण बचा सकते हैं।

तीनों उत्तर सही व युक्तियुक्त भेजने वालोंके नाम:

१-राकेश शर्मा, लखनऊ; २-रीता खंडेलवाल, आगरा; ३-कुलदीप प्रकाश, इलाहाबाद; ४-अशोककुमार कुमुद, जबलपुर; ५-दयाशंकर वासुदेवसिंह, रोहा; ६-रवि राघव, आगरा; ७-अजयकुमार सक्सेना; कानपुर; ८-लाजपत राय, आगरा; ९-अशोककुमार दीक्षित, कानपुर; १०-पद्मा गर्ग, कानपुर; ११-कमलनारायण अग्रवाल, फरीदाबाद।

पराग का आगामी मार्च अंक

होली विशेषांक

(सामान्य अंकों से १६ पृष्ठ अधिक)

विशेष मजेदार १४ कहानियां–

- बच्चों की पार्लियामेंट : अवतारसिंह
- चूहों के नाम ब्राडकास्ट : हरिकृष्ण देवसरे
- चार चुलबुले : रामकुमार भ्रमर
- भंग की महिमा : युगलकिशोर भास्कर 'पुष्प'
- डाबूजी स्कूल में : विष्णु प्रभाकर
- मुल्ला नसरुद्दीन : ओमप्रकाश बजाज
- तुम दुखी, मैं दुखी : मनहर चौहान
- वाह री दादी : अमृतलाल बेगड़
- हमारा पालतू नारद : रस्किन बांड
- पागल कुत्ता : सुरजीत
- ठिनको राजकुमारी : डी. के. जैन
- नाई और पंडित : दर्शी राही
- नींदके प्यासे : रामलाल
- लोमड़ लाला और टिलबिल : बलदेवसिंह

इनके अलावा

रोमांचकारी वैज्ञानिक बाल-उपन्यास—

'नीलीअंगूठी और परीरानी' : चंद्रप्रकाश 'इंदु'

होली का समां बांध देने वाले लेख, मजेदार कविताएं, कार्टून, सादे और रंगीन चित्र आदि

पृष्ठ : ८० मूल्य : ५० पैसे

kissekahani.com

बालिकाओं के लिए

कढ़ाई की शुरुआत

—श्यामलता तिवारी

पढ़ाई-लिखाईके अलावा और भी कुछ ऐसे उपयोगी हुनर हैं जिनमें लड़कियोंका माहिर होना जरूरी है, जैसे—पाकशास्त्र, घरकी सजावट, सिलाई, बुनाई, कढ़ाई आदि ।

जो लड़कियां कढ़ाई सीखना तो चाहती हैं, लेकिन उचित मार्गदर्शनके अभावके कारण सीख नहीं सकतीं, उनके लिए कढ़ाईकी प्रारंभिक जानकारीके साथ साथ कुछ सरल नमूनोंको इन पृष्ठोंपर छापा जा रहा है ।

कढ़ाईमें रुचि रखने वाली लड़कियोंको सबसे पहले टांकोंकी जानकारी होनी जरूरी है । टांके कई प्रकारके होते हैं, जिनमेंसे यहां चार तरहके टांकोंके नमूने दिए जा रहे हैं (देखो चित्र नं १)।

पहला टांका—रनिंग लेस्ड स्टिच ।

दूसरा टांका—रनिंग लेस्ड स्टिच (इस टांके और पहले टांकेमें थोड़ा अंतर है)।

तीसरा टांका—क्रास स्टिच ।

चौथा टांका—चेन स्टिच अथवा जंजीरका टांका ।

अभ्यासके लिए पहला टांका अर्थात् रनिंग लेस्ड स्टिचके अनुसार किसी रूमालपर कढ़ाईकी शुरुआत करो । जब थोड़ी दक्षता आ जाए, तो किसी बड़े कपड़ेपर, जैसे—टेबल-क्लाथ आदिपर मश्क करो । इसके लिए पहले एक चौकोर कपड़ा ले लो और उसकी चारों ओर आधी इंचकी पट्टी मोड़कर बखिया अथवा तुरपन कर लो । फिर किसी रंगीन धागेसे (जैसे केसरी रंगका धागा) रनिंग स्टिच (कच्ची खड़ी सिलाई) कर लो । इस कामके लिए मोटा धागा या लच्छीका क्लार्क धागा ज्यादा उपयुक्त होगा । उसी सिलाई किए हुए डोरोंमेंसे दूसरे रंगका धागा (काले या नीले रंगका) लेकर जैसा पहले टांके—रनिंग लेस्ड स्टिचके चित्रमें बताया गया है, बनानेकी कोशिश करो ।

इसी तरह मेजपोश या तकिएके गिलाफपर दूसरा टांका यानी रनिंग लेस्ड स्टिचके अनुसार कढ़ाई की जा सकती है । दूसरे टांके और पहले टांकेमें अंतर यह है कि पहले टांकेमें दूसरे रंगके धागेको, जो रनिंग स्टिचमेंसे लिया गया है, थोड़ा खींचकर लिया गया है और ऊपर नीचेसे लिया गया है । जब कि दूसरे टांकेमें धागेको थोड़ा छोड़ छोड़कर रनिंग स्टिचके नीचेसे बनाया गया है । नमूनेके लिए देखो चित्र नं : 'क' ।

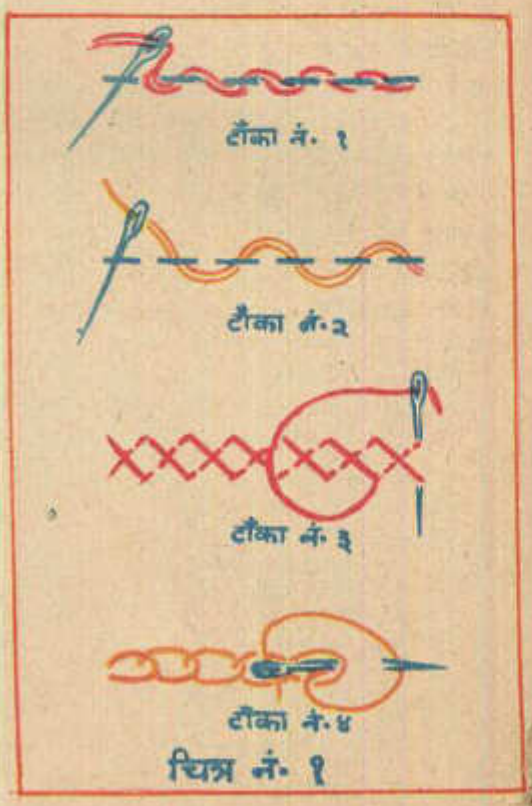

चित्र नं. १

अब तीसरा ट
लिए जिस कपड़ेप
जालीनुमा हो अथ
वक्रम टांक दो
बनाओ । इस टां
होता है—जिसके
हैं और तुम उसे अ
शुरूमें इसे सी
लाइनमें दो-तीन
चीज देखनेमें सुंद
हो जाएगा । त
तरह तरहके सुंद
आदिकी डिजाइन
सकती हो ।
चौथा टांका
भी कहते हैं । इस
फूल और हंसके
आउट लाइन बन
डिजाइन तुम त
सकती हो और फू

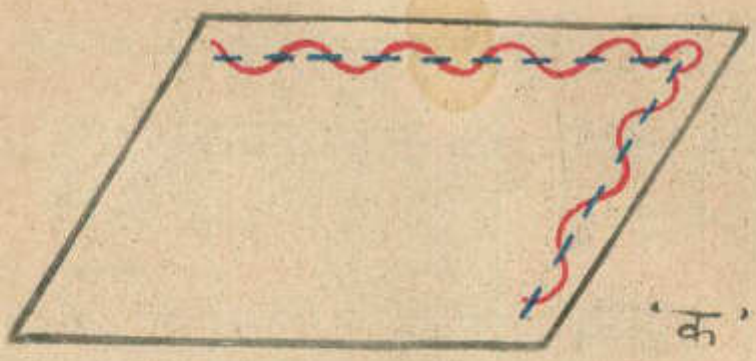

के कोनेमें।

यद्यपि शुरू शुरूमें कढ़ाईमें सफाई नहीं आती है, लेकिन लगातार अभ्यास करते रहनेसे जब चेन समान बनने लगेगी, तो निश्चय है कि कढ़ाई देखनेमें सुंदर, साफ-सुथरी और कलात्मक लगेगी।

अब तीसरा टांका है—क्रास स्टिच। इसके लिए जिस कपड़ेपर कढ़ाई करनी हो वह या तो जालीनुमा हो अथवा साधारण कपड़ेपर जालीवाला वक्रम टांक दो और डोरे गिनकर क्रास स्टिच बनाओ। इस टांकेके लिए मैटी क्लाथ उपयुक्त होता है—जिसके स्कर्ट, गिलाफ, चादर आदि बनते हैं और तुम उसे आसानीसे काढ़ सकती हो।

शुरूमें इसे सीखनेके लिए पहले सीधी सीधी लाइनमें दो-तीन रंगके क्रास स्टिच बनानेसे वह चीज देखनेमें सुंदर भी लगेगी और अभ्यास भी हो जाएगा। तब तुम धागोंको गिन गिनकर तरह तरहके सुंदर सुंदर फूल, पक्षी, जानवर आदिकी डिजाइनें काढ़कर घरकी शोभा बढ़ा सकती हो।

चौथा टांका चेन स्टिच है जिसे जंजीर टांका भी कहते हैं। इसके लिए नमूनेके रूपमें दिए गए फूल और हंसके डिजाइनोंको तुम इस टांकेसे आउट लाइन बनाकर काढ़ सकती हो। हंसका डिजाइन तुम तकिएके गिलाफके बीचमें काढ़ सकती हो और फूलका डिजाइन किसी भी रूमाल-

बाद कढ़ाई किए हुए कपड़ेको अच्छी तरह ठंडे पानीमें साबुनसे धोकर सुखा लो। इसपर फिर हल्की-सी इस्त्री कर लो। इससे कपड़ेमें लगे हुए दाग़ निकल जाएंगे और कढ़ाईमें भी चमक आ जाएगी। ●

११ अशोक नगर, फ्लाट नं. ९०, चेंबूर, बम्बई ७१

समाचारों और विचारों के सार के लिये – राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय गतिविधि से साक्षातकार के लिये

दिनमान

सर्वोत्तम हिन्दी समाचार साप्ताहिक

हिन्दी का एकमात्र ऐसा साप्ताहिक जिसमें देश - विदेश की राजनैतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक हलचल की पूरी जानकारी मिलती है। समाचारों और विचारों का सटीक सार जाने - माने लेखकों और पत्रकारों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है।

दिनमान साप्ताहिक हर रुचि के व्यक्ति के लिए, परिवार के हर सदस्य के लिए।

मूल्य ५० पैसे

टाइम्स आफ इन्डिया प्रकाशन
बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग,
नयी दिल्ली

IWTBC-4084 (1